INFUSION NOTES
WHEN ONLY THE BEST WILL DO

राजस्थान
पटवार

भाग-3

इतिहास (भारत + राजस्थान)

राजस्थान अधीनस्थ और मंत्रालयिक सेवा चयन बोर्ड (RSMSSB)

प्रस्तावना

प्रिय पाठकों, प्रस्तुत नोट्स "राजस्थान पटवारी नोट्स" को एक विभिन्न अपने अपने विषयों में निपुण अध्यापकों एवं सहकर्मियों की टीम के द्वारा तैयार किया गया है/ ये नोट्स पाठकों को राजस्थान अधीनस्थ एवं मंत्रालयिक सेवा चयन बोर्ड (RSMSSB) द्वारा आयोजित करायी जाने वाली परीक्षा " राजस्थान पटवारी भर्ती परीक्षा – 2021" में पूर्ण संभव मदद करेंगे/

अंततः सतर्क प्रयासों के बावजूद नोट्स मे कुछ कमियों तथा त्रुटियों के रहने की संभावना हो सकती है / अतः आप सुधी पाठको का सुझाव सादर आमंत्रित हैं/

प्रकाशक:

INFUSION NOTES

225, OKAY PLUS SPACES, मालवीयनगर इंडस्ट्रियल एरिया, नियर अपैक्स सर्किल, जयपुर, 302017 (RAJASTHAN)

मो : 01414045784

ईमेल : contact @ infusionnotes.com

वेबसाइट : http://www.infusionnotes.com/

मूल्य : ₹600

संस्करण : नवीनतम (2021)

आधुनिक भारत का इतिहास

1. सिंधु घाटी सभ्यता	1
2. वैदिक संस्कृति	7
3. धार्मिक आन्दोलन	12
4. महाजनपद काल	16
5. मौर्य काल	18
6. गुप्त काल	23

मध्यकालीन भारत

1. अरबों का सिंध पर आक्रमण	26
2. दिल्ली सल्तनत	29
3. खिलजी वंश (1290-1320 ई.)	34
4. तुगलक वंश (1320-1414 ई.)	36
5. सैयद वंश (1414-1451)	38
6. लोदी वंश	39
7. प्रशासनिक और कृषि (सल्तनतकाल)	41
8. भक्ति एवं सूफी आन्दोलन	46
9. बहमनी एवं विजयनगर साम्राज्य	53
10. मुग़ल साम्राज्य (1526-1707)	59

आधुनिक भारत

1. यूरोपीय कम्पनियों का आगमन	67
2. आंग्ल - मराठा युद्ध (सूरत की संधि)	85
3. 1857 ई. का विद्रोह कारण एवं परिणाम	95
4. सामाजिक धार्मिक सुधार आन्दोलन	105
5. राष्ट्रीय आन्दोलन	117
6. उग्र वादी आन्दोलन	121
7. क्रांतिकारी आन्दोलन	125
8. गांधीवाद	129

राजस्थान का इतिहास

1. राजस्थान के इतिहास को जानने के स्त्रोत	150
2. राजस्थान की प्राचीन सभ्यताएँ	169
3. गुर्जर प्रतिहार वंश	179
4. मेवाड़ का इतिहास	183
5. मारवाड़ का इतिहास	204
6. राजस्थान के परमार वंश	230

7. मुग़ल सम्राट और उनकि राजपूत नीति 235
8. मध्यकालीन राजस्थान की प्रशासनिक व्यवस्था 239
9. राजस्थान की रियासतें और ब्रिटिश संन्धियां 257
10. राजस्थान में 1857 की क्रांति में विद्रोह 272
11. राजस्थान के सांस्कृतिक मुद्दे 278
12. राजस्थान में किसान एवं आदिवासी आन्दोलन 283
13. प्रजामंडल 295
14. राजस्थान के राजनीतिक संगठन व समाचार पत्र 310
15. राजस्थान इतिहास की प्रसिद्ध महिलायें 313
16. राजस्थान का एकीकरण 315

अध्याय – I

सिन्धु घाटी सभ्यता

परिचय -

इतिहास क्या होता है?
इतिहास शब्द तीन संस्कृत शब्दों से मिलकर बना है। इति-ह-आह अर्थात् भूत में जो इस तरह था अर्थात् इतिहास अतीत में घटित घटनाओं का विवरण है। आंग्ल शब्द हिस्ट्री (history) ग्रीक शब्द हिस्टोरिया से लिया गया है, जिसका अर्थ है- वास्तविक रूप से घटित होने वाले तथ्य।

सामान्यतः इतिहासकार द्वाराअतीत की घटनाओं का गहन अध्ययन करके मानवीय मस्तिष्क को समझना ही इतिहास है।

इतिहास का जनक हेरोडोटस को कहा जाता है वें एक इतिहासकार थे।

हेरोडोटस (मृत्यु४२५ई.पू), यूनान के प्रथम इतिहासकार एवं भूगोलवेत्ता थे। हिरोडोटस का संस्कृत नाम हरिदत्त था वह वास्तव में एक मेड थे। इसी कारण उन्होंने लगातार आर्यो के मेड इतिहास पर अपनी नज़र बनाये रखी थी। उनके द्वारा हीपारसके मेड आर्य राजा ओं का सही इतिहास पता चलता है । उन्होंने अपने इतिहास का विषय पेलोपोनेसियन युद्ध को बनाया था। उनके द्वारा लिखित पुस्तक हिस्ट्रीरिका थी।

इतिहासका अध्ययन : -

इतिहास का अध्ययन करने के लिए इसको तीन भागों में विभाजित किया जाता है -
1. प्रागैतिहासिक काल
2. आद्य ऐतिहासिक काल
3. ऐतिहासिक काल

1. प्रागैतिहासिक काल -

वह काल जिसमें कोई भी लिखित स्रोत नहीं मिला अर्थात् सभ्यता और संस्कृति का वह युग जिसमें मानव की उत्पत्ति मानी जातीहै। मानव की उत्पत्ति प्रागैतिहासिक काल से ही हुई है।

2. आद्य ऐतिहासिक काल -

आद्य ऐतिहासिक काल वह काल होता है जिस के लिखित स्रोत मिले लेकिन उसको पढ़ा नहीं जा सका जैसे - सिंधु घाटी सभ्यता उसमें जो भाषा थी उसको आज तक पढ़ान हीं गया है इसलिए इसलिए सभ्यता को आद्यऐतिहासिक काल की श्रेणी में रखते हैं। इस काल की लिपि को सर्पीलाकार लिपिक हते हैं क्योंकि सिंधु घाटी सभ्यता की लिपि दाई से बाई ओर लिखी जाती थी। इस लिपि को गोमूत्र लिपि एवं "बूस्टोफिदन" लिपि के नाम से भी जानते हैं ।इसी प्रकार ईरान और इराक की मेसोपोटामिया की सभ्यता इसी काल की है। राजस्थान में इस काल की सभ्यता में कालीबंगाकी सभ्यता देखने को मिलती है अर्थात कालीबंगा की सभ्यता इसी काल की सभ्यता है।

3. ऐतिहासिक काल

ऐतिहासिक काल वह काल होता है जिसमें लिखित स्रोत मिले और उनको पढ़ा भी जा सका जैसे वैदिक का लगि समेवेदों की रचना हुई थी। और उनको पढ़ा भी जा सकता है।

सिन्धु घाटी सभ्यता

- यह दक्षिण एशिया की प्रथम नगरीय सभ्यता थी।
- इस सभ्यता को सबसे पहले हड़प्पा सभ्यता नाम दिया गया क्योंकि सबसे पहले 1921 में हड़प्पा नामक स्थल की खोज दयाराम साहनी द्वारा की गई थी।

इस सभ्यता को निम्न अन्य नामों से भी जाना जाता है →

- सैंधव सभ्यता- जॉन मार्शल के द्वारा कहा गया
- सिन्धु सभ्यता - माटियर व्हीलर के द्वारा कहा गया
- वृहतर सिन्धु सभ्यता – ए. आर-मुगल के द्वारा कहा गया
- प्रथम नगरीय क्रान्ति- गार्डन चाइल्ड के द्वारा कहा गया
- सरस्वती सभ्यता के द्वारा कहा गया
- मेलूहा सभ्यता के द्वारा कहा गया
- कांस्यकालीन सभ्यता के द्वारा कहा गया

- मोहनजोदड़ो को स्तूपों का शहर भी कहा जाता है।
- बताया जाता है कि यह शहर बाढ़ के कारण सात बार उजड़ा एवं बसा।
- यहा से यूनीकॉर्न प्रतीक वाले चान्दी के दो सिक्के मिले है।
- वस्त्र निर्माण का प्राचीनन साक्ष्य यहाँ से मिलता है। कपास के प्रमाण - मेहरगढ
- सुमेरियन नाव वाली मुहर यहां से मिली है।
- मोहनजोदड़ो की सबसे बड़ी इमारत संरचना यहां से प्राप्त अन्नागार है। (राजकीय भण्डारागार)
- यहां से एक २० खम्भों वाला सभाभवन मिला है।

मैके ने इसे 'बाजार' कहा है।

- बहुमंजिली इमारतों के साक्ष्य, पुरोहित आवास, पुरोहितों का विद्यालय, पुरोहित राजा की मूर्ति, कुम्भकारों की बस्ती के प्रमाण भी मोहनजोदड़ो से मिले है।
- बड़ी संख्या में कुओं की प्राप्ति ।
- ४ कक्षों वाला विशाल स्नानागार भी यहीं से प्राप्त होआ है।

मार्शल- आश्चर्यजनक निर्माण

कालीबंगा-

- खोज अमलानन्द घोष द्वारा गंगानगर में
- सरस्वती नदी (वर्तमान घग्घर के तट पर)
- कालीबंगा वर्तमान में हनुमानगढ़ में है।
- उत्खनन - बी.बी लाल
  वी. के. थापड़
- कालीबंगा - काले रंग की चुड़िया
- कालीबंगा - सैंधव सभ्यता की तीसरी राजधानी
- एक साथ दो फसलों की बुवाई तथा जालीदार जुताई के साक्ष्य मिले।
- कालीबंगा से प्राप्त दुर्ग दो भागों में बंटा हुआ- द्विभागीकरण
- सड़को को पक्का बनाने का प्रमाण कालीबंगा से प्राप्त।
- युग्म शवाधान का साक्ष्य शवों का अन्तिम संस्कार की तीनों विधियों के साक्ष्य यहां से प्राप्त।
- भूकम्प आने के प्राचीनतम प्रमाण
- वृषभ की ताम्रमूर्ति भी कालीबंगा से प्राप्त हुई है।
- यहां से प्राप्त लेखयुक्त बर्तन से स्पष्ट होता है कि इस सभ्यता की लिपि दाई से बाई ओर लिखी जाती थी।

चन्हूदड़ो-

- खोज एन. जी. मजूमदार – सिधु तट पर डकैतों ने हत्या कर दी।
- उत्खनन मैके ने किया।
- सिन्धु सभ्यता का यह औद्योगिक शहर था।
- यहां मणिकारी, मुहर बनाने, भार-माप के बटखड़े बनाने का काम होता था।
- सिन्धु संस्कृति के बाद विकसित झूकर-झांगर संस्कृति के अवशेष यहां से ही मिले।

लोथल

- साबरमती एव भोगवा नदी के संगम पर ज्यादातर हिस्सा भोगवा के तट पर
- खोज एस. आर. राव
  - लघु हडप्पा
  - लघु मोहनजोदड़ो की संज्ञा
- बन्दरगाह या जल भण्डार या गोदीबाड़ा यहां की सबसे महत्त्वपूर्ण खोज है।
- लोथल का बन्दरगाह ही सिन्धु सभ्यता की सबसे बड़ी इमारती संरचना है।
- लोथल से वृत्ताकार या चतुर्भुजाकार आग्निवेदी पाई गई है।
- लोथल का मिश्र एवं मेसोपोटामिया के साथ सीधा व्यापार होता था।
- लोथल का दुर्ग शासक का आवास था ।

धौलावीरा

- खोज जे.पी. जोशी द्वारा- मनहर एवं मानसेहरा नदियों के बीच कादिर द्वीप पर की ।
- धौलावीरा एक आयताकार नगर था। जो तीन भागों में विभक्त था।
- धौलावीरा से जल-प्रबंधन के साक्ष्य प्राप्त हुये हैं।
- भारत के विशालतम सिन्धु सभ्यता स्थल धौलावीरा तथा राखीगढ़ी है।
- धौलावीरा से घोड़े की कलाकृतियों के अवशेष मिले है।
  डकैतों ने हत्या कर दी।
- उत्खनन मैके ने किया।
- सिन्धु सभ्यता का यह औद्योगिक शहर था।

अध्याय – 5

मौर्य काल

राजनीतिक इतिहास

- शासन काल चतुर्थ शताब्दी ई.पू. से द्वितीय शताब्दी ई.पू. तक (321-185 ई.पू)
- स्थापना चन्द्रगुप्त मौर्य द्वारा आचार्य चाणक्य (विष्णुगुप्त) के सहयोग से। (मगध में)
- मौर्य शासन से पहले मगध पर नंद वंश के शासक धनानन्द का शासन था।
- मौर्य राजवंश ने लगभग 137 वर्ष तक भारत में राज किया।
- राजधानी पाटलिपुत्र (पटना)
- साम्राज्य 5 लाख वर्ग किलोमीटर तक फैला हुआ था।
- **आचार्य चाणक्य**
- जन्म तक्षशिला में (आचार्य)
- अन्य नाम विष्णुगुप्त, कौटिल्य
- चन्द्रगुप्त का प्रधानमंत्री तथा प्रधान पुरोहित
- पुराणों में चाणक्य को "द्विजर्षभ" कहा गया है जिसका मतलब है श्रेष्ठ ब्राह्मण
- चन्द्रगुप्त मौर्य की मृत्यु के बाद भी बिन्दुसार के समय भी प्रधानमंत्री बना रहा (कुछ समय के लिए)
- चाणक्य तक्षशिला विश्वविद्यालय में आचार्य रहे थे।
- इन्होंने अर्थशास्त्र नामक पुस्तक की रचना की।
- अर्थशास्त्र मौर्यकालीन साम्राज्य की राजव्यवस्था एवं शासन प्रणाली पर प्रकाश डालता है।
- अर्थशास्त्र में 15 अधिकरण तथा 180 प्रकरण हैं।

चन्द्रगुप्त मौर्य

- चन्द्रगुप्त मौर्य 322 ई.पू. धनानन्द को हरा कर मगध का शासक बना।
- इसने सिकन्दर के उत्तराधिकारी सेल्यूकस को भी हराया था।
- सेल्युकस की पुत्री का विवाह चन्द्रगुप्त मौर्य के साथ हुआ।
- उपाधियां - पाटलिपुत्रक (पालिब्रोथस)
- भारत का मुक्तिदाता
- प्रथम भारतीय साम्राज्य का संस्थापक

मेगस्थनीज

- सेल्युकस 'निकेटर' का राजदूत
- चन्द्रगुप्त के शासन काल में पाटलिपुत्र में कई वर्षों तक रुका।
- इसने 'इंडिका' नामक पुस्तक की रचना की जिससे मौर्यकालीन की शासन व्यवस्था की जानकारी मिलती है।
- मेगस्थनीज भारत आने वाला प्रथम राजदूत था।
- जस्टिन-चन्द्रगुप्त की सेना को डाकुओं का गिरोह कहता है।
- यूनानियों ने चन्द्रगुप्त को सैण्ड्रोकोट्स नाम दिया।
- चन्द्रगुप्त जैन धर्म का अनुयायी था।
- चन्द्रगुप्त के संरक्षण में प्रथम जैन संगीति पाटलिपुत्र में हुई थी।
- चन्द्रगुप्त मौर्य ने अपना शासन पुत्र बिन्दुसार को सौंप दिया था।
- फिर वह अपने गुरु भद्रबाहु के साथ श्रवणबेलगोला (मैसूर) चला गया।
- वहाँ पर उसने सलेखना विधि (अन्न-जल त्याग) द्वारा मृत्यु (297 ई.पू.) को प्राप्त किया।

बिन्दुसार

- अन्य नाम अमित्रघात
- इसने अपने साम्राज्य को सुरक्षित रखने में सफलता प्राप्त की।
- सीरिया के शासक एन्टीओकस ने डायमेकस को बिन्दुसार के दरबार में भेजा था।

अध्याय – 6

गुप्त काल

- गुप्त राजवंश प्राचीन भारत के प्रमुख राजवंशों में से एक था। मौर्य वंश के पतन के बाद दीर्घकाल में हर्ष तक भारत में राजनीतिक एकता स्थापित नहीं रही।
- कुषाण एवं सातवाहनों ने राजनीतिक एकता लाने का प्रयास किया। मौर्योत्तर काल के उपरान्त तीसरी शताब्दी ईस्वी में तीन राजवंशो का उदय हुआ जिसमें मध्य भारत में नाग शक्ति, दक्षिण में वाकाटक तथा पूर्वी में गुप्त वंश प्रमुख हैं। मौर्य वंश के पतन के पश्चात नष्ट हुई राजनीतिक एकता को पुनः स्थापित करने का श्रेय गुप्त वंश को है।
- गुप्त साम्राज्य की नींव तीसरी शताब्दी के चौथे दशक में तथा उत्थान चौथी शताब्दी की शुरुआत में हुआ। गुप्त वंश का प्रारम्भिक राज्य आधुनिक उत्तर प्रदेश और बिहार में था।

गुप्त वंश की उत्पत्ति

- चन्द्रगुप्त द्वितीय की पुत्री प्रभावती गुप्त ने पूना अभिलेख में अपने वंश को स्पष्टतः धारण गोत्रीय बताया हैं. अग्रवालो के 18 गोत्र में से एक गोत्र धारण हैं.
- गुप्त वैश्यों की उपाधि हैं. आज भी धार्मिक कर्म व संकल्प करते हुए वैश्य पुरोहित नाम व गोत्र के साथ गुप्त उपनाम का उल्लेख करते हैं. गुप्त शासको के नाम श्री, चन्द्र, समुद्र, स्कन्द आदि थे. जबकि गुप्त उनका उपनाम था. जो की उनके वर्ण व जाति को उद्घोषित करता हैं. गुप्त उपनाम केवल और केवल वैश्य समुदाय के व्यक्तियों के लिए प्रयुक्त होता हैं.इतिहास में व पुराणो में गुप्त सम्राटो को वैश्य बताया गया हैं.
- बोद्ध धर्मग्रन्थ आर्यमंजुश्री कल्प में गुप्त वंश को वैश्य बताया गया हैं. इतिहासकार अल्तेकर, आयंगर, रोमिल्ला थापर, रामचरण शर्मा आदि ने गुप्त वंश को वैश्य बताया हैं.
  गुप्त सम्राटो ने यज्ञोपवित धारण किया था. व अश्वमेध यज्ञ कराये थे. केवल द्विज ही यह कार्य कर सकते थे. अग्रवाल द्विज जाति हैं. और प्राचीन क्षत्रिय जाति हैं. जिसने बाद में वैश्य कर्म अपनाया.
- गुप्त वंश के शासक अग्रवाल थे. प्रख्यात इतिहासकार राहुल संस्कृतायन ने भी गुप्त वंश को अग्रवाल वैश्य बताया हैं.
- अग्रवालो की कुलदेवी माता लक्ष्मी हैं. गुप्त सम्राटो की कुलदेवी भी माता लक्ष्मी हैं. अग्रवाल मुख्यतः वैष्णव होते हैं. और शुद्ध शाकाहारी भी. गुप्त वंश के शासक भी वैष्णव और शाकाहारी थे. गुप्त वंश के समय में भारत सोने की चिड़िया कहलाया था. एक विशुद्ध वैश्य शासक ही व्यापार को बढ़ावा दे सकता हैं.

गुप्त वंश के शासक

घटोत्कच (319)

गुप्त वंश के शासक श्रीगुप्त के पश्च्यात उसका पुत्र घटोत्कच राजगद्दी पर बैठा। इसने २८० ई. से 320 ई. तक शासन किया। इसने महाराजा की उपाधि धारण की थी। उत्पन्न होते समय उसके सिर पर केश (उत्कच) न होने के कारण उसका नाम घटोत्कच रखा गया। वह अत्यन्त मायावी था जिस कारण वो जन्म लेते ही बड़ा हो गया था।

चंद्रगुप्त प्रथम (320-350)

अपने पिता घटोत्कच के बाद सन् ३२० में चन्द्रगुप्त प्रथम राजा बना। चन्द्रगुप्त, गुप्त वंशावली में पहला स्वतन्त्र शासक था। इसने महाराजाधिराज की उपाधि धारण की थी। बाद में लिच्छवि को अपने साम्राज्य में सम्मिलित कर लिया। यहीं से उसका साम्राज्य विस्तार हुआ। उसने सफलता पूर्वक लगभग पंद्रह वर्ष (320 ई. से 335 ई. तक) तक शासन किया।

समुद्रगुप्त (350-375) समुद्रगुप्त (350-375)

चन्द्रगुप्त के 15 वर्षो तक शासन करने के बाद उत्तराधिकारी के रूप में 330 ई0 में समुद्रगुप्त, गुप्त वंश का शासक बना। जिसने करीब 50 वर्षो तक शासन किया। वह बहुत ही प्रतिभाशाली योद्धा था, अपनी बुद्धि और कौशक के बल पर उसने पूरे दक्षिण में सैन्य अभियान करके विन्ध्य क्षेत्र के बनवासी कबीलों को परास्त किया।

युद्ध में पृथ्वीराज के सामंत तथा दिल्ली के तोमर शासक गोविंदराज की मृत्यु हुई।

- चंदबरदाई के अनुसार युद्ध में पराजय के बाद पृथ्वीराज तृतीय को बंदी बनाकर गजनी ले जाया गया। शब्दभेदी बाण छोड़ कर मुहम्मद गौरी को मार दिया गया।
- हसम निजामी के अनुसार युद्ध में पराजित होने के बाद पृथ्वीराज ने अधीनता स्वीकार कर ली और गौरी ने उसे अजमेर में अपनी अधीन रखकर शासन करवाया। आगे गौरी के विरुद्ध विद्रोह करने की कोशिश की जिसमें पृथ्वीराज मारा गया।
- ।।92 ई .के बाद गौरी ने अपने दास ऐबक को भारतीय क्षेत्रों का प्रशासक घोषित कर दिया।
- ।।94 ई .के बाद गौरी के दो सेनापति कुतुबुद्दीन ऐबक तथा बख्तियारखिलजी ने भारतीय क्षेत्रें को जीतना प्रारंभ किया।
- बख्तियार खिलजी को असम के माघ शासक ने पराजित किया तथा ।205 ई . में बख्तियार खिलजी के ही सैन्य अधिकारीअलिमर्दान ने मुहम्द गौरी की हत्या कर दी।
- कुतुबुद्दीन ऐबक ने ।।95 ई .में अन्हिलवाड़ा के शासक भीम द्वितीय पर आक्रमण किया लेकिन ऐबक पराजित हुआ।
- ऐबक ने ।।97 में अन्हिलवाड़ा पर फिर से आक्रमण किया और उसे लूट लिया भीम द्वितीय ने अधीनता स्वीकार नहीं की लेकिन लगातार युद्धों से उसकी आर्थिक स्थिति खराब हो गई थी। अतः भीम की मृत्यु के बाद गुजरात मंे सोलंकी वंश के स्थान पर बघेल वंश की स्थापना हुई।
- ।203 ई .में ऐबक ने चंदेल शासक परमर्दिदेव से कालींजर को जीत लियाथा।

मुहम्मद गौरी की मृत्यु

- ।206 ई .में मुहम्मद गौरी ने पंजाब के खोखर जनजाति के विद्रोह कोदबाने के लिए भारत पर अंतिम आक्रमण किया
- गौरी ने लक्ष्मी की आकृति वाले कुछ सिक्के चलाये

अध्याय –2

दिल्ली सल्तनत

दिल्ली सल्तनत के क्रमानुसार पाँच वंश निम्नलिखित थे -

- ।.गुलाम वंश / मामलुक वंश (।206-।290)
- 2.खिलजी वंश (।290-।320)
- 3.तुगलक वंश (।320-।4।4)
- 4.सैयद वंश (।4।4-।45।)
- 5.लोदी वंश (।45।-।526)
- इनमें सें चार वंश मूलतः तुर्क थे जबकि अंतिम वंश लोदी वंश अफगान था।

गुलाम वंश के शासक -

कुतुबुद्दीन ऐबक (।206-।2।0 ई .तक)

- भारत में तुर्की राज्य /दिल्ली सल्तनत / मुस्लिम राज्य कीस्थापना करने वाला शासक ऐबक ही था।
- मुहम्द गौरी ने ऐबक को अमीर ए आखूर अस्तबलों का प्रधान के पद पर नियुक्त किया।
- ।।92 ई .के तराइन के युद्ध में ऐबक ने गौरी की सहायता की।
- तराइन के द्वितीय युद्ध के बाद गौरी ने ऐबक को अपने मुख्य भारतीय प्रदेशों का सूबेदार नियुक्त किया।
- जून ।206 में राज्याभिषेक करवाया तथा सुल्तान की बजाय मलिक/सिपहसालार की उपाधि धारण की।
- इसने अपने नाम के सिक्के भी नहीं चलाये एवंम अपने नाम का खुतबा पढ़वाया)खुतबा एक रचना होती थी जो मौलवियों से सुल्तान शुक्रवार की राज को नजदीक कीमस्जिद में अपनी प्रंशसा में पढ़वाते थे (खुतबा शासक की संप्रभूता का सूचक होता था।
- ऐबक ने प्रारंभ इंद्रप्रस्थ दिल्ली के पास को सैन्य मुख्यालय बनाया तथा कुछ समय बाद यल्दौज तथा कुबाचा)मुहम्मद गौरी

के दास (के संघर्ष को देखते हुए लाहौर को अपनी राजधानी बनाया।

- ऐबक ने यल्दौज पर आक्रमण कर गजनी पर अधिकार कर लिया, लेकिन गजनी की जनता यल्दौज के प्रति वफादार थी तथा 40 दिनों के बाद ऐबक ने गजनी छोड़ दिया।

ऐबक की मृत्यु –

- 1210 ई .में लाहौर में चौगान पोलो खेलते समय घोडे से गिर जाने केकारण ऐबक की मौत हो गई। इसका मकबरा लाहौर में ही बनाया गया है।

आरामशाह का विवाद

- कुछ इतिहासकार कहते है। कि आरामशाह ऐबक का पुत्र था। वही मिनहाज के अनुसार ऐबक की केवल तीन पुत्रियाँ थीं पुत्र नहीं। अबुल फजल के अनुसार आरामशाह ऐबक का भाई था। आरामशाह का शासन केवल 8 माह का रहा।
- इल्तुतमिश ने आरामशाह को हरा दिया।
- आरामशाह को लाहौर के सरदारों का समर्थन प्राप्त था वही इल्तुतमिश को दिल्ली के सरदारों का।

इल्तुतमिश (1210-1236 ई)

- मलिक शम्सुद्दीन इल्तुतमिश ऐबक का दामाद था, न कि उसका वंशज। इल्तुतमिश का शाब्दिक अर्थ राज्य का रक्षक स्वामी होता है।। उसका समानार्थक शब्द आलमगीर या जहाँगीर विश्व विजेता भी होता है।
- ऐबक की मृत्यु के समय इल्तुतमिश बदायू यू.पी .का इक्तेदार था।
- ऐबक की मृत्यु के बाद कुछ इतिहासकारों के अनुसार आरामशाह लाहौर में नया शासक बना, लेकिन दिल्ली के तुर्की अमीरों ने इल्तुतमिश को नया सुल्तान घोषित किया।
- इल्तुतमिश दिल्ली सल्तनत का वास्तविक संस्थापक तथा प्रथम वैधानिक सुल्तान था। इसने 1229 ई .में बगदाद के खलीफा अल-मुंतसिर-बिल्लाह से सुल्तान कीउपाधि व खिलअत इजाजत प्राप्त की।
- इल्तुतमिश ने अपने नाम का खुतबा पढ़वाया तथा मानक सिक्कें टंका चलाया था। टंका चांदी का होता था)। टंका =48 जीतल(
- यह पहला मुस्लिम शासक था जिसने सिक्कों पर टकसाल का नाम अंकित करवाया था।
- शहरों में इल्तुतमिश ने न्याय के लिये काजी, अमीर-ए-दाद जैसे अधिकारी नियुक्त किये।
- इल्तुतमिश ने अपने 40 तुर्की सरदारों को मिलाकर तुर्कान -ए -चहलगामी नामक प्रशासनिक संस्था की स्थापना की थी।

इक्ता प्रणाली का संस्थापक -

- इल्तुतमिश ने प्रशासन में इक्ता प्रथा को भी स्थापित किया। भारत में इक्ता प्रणाली का संस्थापक इल्तुतमिश ही था।
- इसने दोआब गंगा-यमुना क्षेत्र में हिन्दुओ की शक्ति तोड़ने के लिए शम्सीतुर्की उच्च वर्ग सरदारों को ग्रामीण क्षेत्र में इक्तायें जागीर बांटी।
- 1226 में रणथंभौर पर आक्रमण
- 1227 में नागौर पर आक्रमण
- 1232 में मालवा पर आक्रमण -इस अभियान के दौरान इल्तुतमिश उज्जैन सेविक्रमादित्य की मूर्ति उठाकर लाया था।
- 1235 में ग्वालियर का अभियान -इस अभियान के दौरान इल्तुतमिश ने अपनेपुत्रों की बजाय पुत्री रजिया को उत्तराधिकारी घोषित किया।
- 1236 ई. में बामियान अफगानिस्तान पर आक्रमण। यह इल्तुतमिश का अंतिम अभियान था।

2. निम्न में से किसने 'गुलरुखी' उपनाम से अपनी कविताओं की रचना की?

(a) फिरोजशाह तुगलक (b) बहलोल लोदी

(c) सिकन्दर लोदी (d) इब्राहीम लोदी

अध्याय - 7

सल्तनतकाल में इस्तेमाल होने वाले प्रशासनिक और कृषि से जुड़े शब्दों की सूची

प्रशासन और कृषि से जुड़े शब्द	अर्थ
अलाइ टंका	अलाउद्दीन खिलजी के टैंक
अलामाथा-ए-सल्तनत	राजसी सत्ता का प्रतीक चिन्ह
आमिल	राजस्व अधिकारी
आमिरसेनापति	तीसरा सर्वोच्च आधिकारी
आमिर-ए-दाद	न्याय का प्रभारी अधिकारी
आमिर-ए-अखुर	घोड़ो का निरीक्षक अधिकारी
आमिर-ए-हाजिब	शाही खालसा अदालत का प्रभारी अधिकारी (जिसे तुर्की मेंबर्बेक/बारबेक भी कहा जाता है)
आमिर-ए-कोह	कृषि का प्रभारी अधिकारी
अर्ज	सैनिको की गिनती, उनके उपकरण और घोड़ों का प्रभारीअधिकारी
अर्ज-ए-मुमालिक	सेना का प्रभारी मंत्री
बबेक/बारबेक	शाही दरबार का प्रभारी अधिकारी
बारिद	सूचना एकत्र करने के लिए राज्य द्वारा नियुक्त खुफियाअधिकारी
बारिद-ए-मुमालिक	राज्य खुफिया सेवा का प्रमुख
दाबिर	सचिव
दाबिर-ए-मुमालिक	मुख्य सचिव
दाग	घोड़ो पर ब्रांडिंग का निशान
दीवान	कार्यालय :केंद्रीय सचिवालय
दीवान-ए-अर्ज	युद्ध मंत्री का कार्यालय
दीवान-ए-इशा	मुख्य सचिव का कार्यालय
हुक्म-ए-मुशाहिद	भू-राजस्व का आकलन (केवल निरीक्षण के द्वारा)
इक्तादार	इक्ता का प्रभारी

INFUSION NOTES
WHEN ONLY THE BEST WILL DO

जागीर	राज्य द्वारा एक सरकारी अधिकारी को दिया गया भूमि का एकटुकड़ा
जीतल	दिल्ली सल्तनतकालीन तांबे के सिक्के
जजिया	गैर-मुसलमानों पर लगाया जाने वाला व्यक्तिगत और वार्षिककर
कारखाना	शाही कारखाना या उद्योग, यह दो प्रकार के होते थे -रत्बी, जानवरों की देखभाल के लिए और गैर-रत्बी, राज्य द्वारा आवश्यक वस्तुओं के निर्माण के लिए।
खालिसा	सीधे राजा द्वारा नियंत्रित भूमि
खिदमात	सेवा देय राशि
खुत्स	गाव का प्रमुख या राजस्व संग्राहक
मदद-ए-माश	धार्मिक या योग्य व्यक्तियों के लिए भूमि या पेंशन का अनुदान
मजलिस-ए-खास	राजा और उसके उच्च अधिकारियों की एक गुप्त बैठक
मजलिस-ए-खिलावत	राजा और उसके उच्च अधिकारियों की एक गुप्त बैठक
मलिक नायब	पूरे राज्य का शासक या राजा की ओर से कार्य करने के लिए अधिकृत राजा का प्रतिनिधि
मुहतासिब	गाव में कानून और व्यवस्था को बनाए रखने के लिए नियुक्त एक अधिकारी, जो गांव का सबसे वरिष्ठ नागरिक होता था।
मुक्ता	गवनेर, एक इक्ता या मध्यकालीन प्रांत का प्रभारी
मुस्तौफी-ए-मम्लाकत	पूरे राज्य का लेखाकार (एकाउंटेंट)
मुस्तौफी-ए-ममालिक	पूरे राज्य का लेखा परीक्षक
नायब-ए-अर्ज	युद्ध मंत्री या उसका सहायक
नायब-ए-मम्लाकत	पूरे राज्य का शासक या राजा की ओर से कार्य करने के लिए अधिकृत राजा का प्रतिनिधि
दीवान-ए-रियासत	व्यापार और वाणिज्य मंत्री का कार्यालय
दीवान-ए-मुस्तखराज	कर संग्रह करने के लिए कार्यालय
दोआब	गगा और यमुना नदी के बीच की भूमि
फ़तवा	सशगनी शरीयत या धार्मिक कानून के अनुसार एक फैसला
फौजदार	सेना का सेनापति
हक्क-ए-शिर्ब	नहर सिचाइ से लाभ
हुक्म-ए-मसाहट	माप के अनुसार भूमि राजस्व का आकलन
चुगी-ए-गल्ला	अनाज पर कर
आमिर-ए-तारब	मनोरजन कर
गल्ला बख्शी, कानकूट	भूमि राजस्व सग्रह की व्यवस्था
नायब-ए-मुल्क	साम्राज्य का शासक
काजी-उल-कज्जात	मुख्य काजी
सराइ-अदल	कपड़े और अन्य विशिष्ट वस्तुओं की बिक्री के लिए दिल्ली के बाजार को अलाउद्दीन खिलजी के द्वारा दिया गया नाम
साशगनी	छः जीतल या तांबे के सिक्कों के बराबर एक छोटा चांदी का सिक्का
सहना-ए-मडी	अनाज के बाजार का प्रभारी अधिकारी
सिपहसालार	सेनापति

गुलाम कालीन वास्तुकला

गुलाम काल में बनी कुछ प्रमुख इमारतों का वर्णन इस प्रकार है। -

कुव्वत-उल-इस्लाम मस्जिद-

- ।।92 ई .में तराइन के युद्ध में पृथ्वीराज चौहान के हारने पर उनके किले रायपिथौरा' पर अधिकार कर वहाँ पर कुव्वत -उल-इस्लाम मस्जिद का निर्माण कुतुबुद्दीन ऐबक ने करवाया।
- वस्तुतः कुतुबुद्दीन ऐबक ने दिल्ली विजय के उपलक्ष्य में तथा इस्लाम धर्म को प्रतिष्ठित करने के उद्देश्य से ।।92 ई.

दिल्ली की गद्दी प्राप्त करने तक कायमरहा।

1. भारत में बाबर द्वारा नवीन प्रशासनिक सुधार प्रारम्भ नहीं करने के विषय में निम्नलिखित में से कौन एक गलत है?

(a) काबुल में प्रशासकीय सुधारों की असफलता।

(b) उसका चार वर्षीय शासन-काल सुधारों के लिए कम था।

(c) वह अफगानों को सैन्य-नेताओं के रूप में रखने का इच्छुक था।

(d) भारत में उसका शासन-काल विजय के युद्धों में ही व्यतीत हुआ था।

2. कृषकों की सहायता हेतु किस मध्ययुगीन शासक ने "पट्टा" एवं "कबूलियत" की व्यवस्था प्रारम्भ की थी?

(a) अलाउद्दीन खलजी

(b) गियासुद्दीन तुगलक

(c) फिरोजशाह तुगलक

(d) शेरशाह

.

अकबर (1556 - 1605)

हुमायूं की मृत्यु के बाद उसके पुत्र अकबर का कलानौर नामक स्थान पर 14 फरवरी, 1556 को मात्र 13 वर्ष की आयु में राज्याभिषेक हुआ।

- अकबर का जन्म 15 अक्टूबर, 1542 को अमरकोट के राजा वीरमाल के प्रसिद्द महल में हुआ था।
- अकबर ने बचपन से ही गजनी और लाहौर के सूबेदार के रूप में कार्य किया था।
- भारत का शासक बनने के बाद 1556 से1560 तक अकबर बैरम खां के संरक्षण में रहा।
- अकबर ने बैरम खां को अपना वजीर नियुक्त कर खाना-ए-खाना की उपाधि प्रदानकी थी।

5 नवम्बर, 1556 को पानीपत के द्वितीय युद्ध में अकबर की सेना का मुकाबलाअफगान शासकमुहम्मद आदिल शाह के योग्य सेनापति हेमू की सेना से हुआ, जिसमें हेमू की हार एवं मृत्यु हो गयी।

1560 से1562 ई.तक दो वर्षों तक अकबर अपनी धय मां महम अनगा, उसके पुत्र आदम खां तथा उसके सम्बन्धियोंके

- प्रभाव में रहा। इन दो वर्षों के शासनकाल को पेटीकोट सर्कार की संज्ञा दी गयी है।
- अकबर ने दक्षिण भारत के राज्यों पर अपना आधिपत्य स्थापित किया था । खानदेश(1591), दौलताबाद(1599) , अहमदनगर (1600) और असीर गढ़ (1601)मुग़ल शासन के अधीन किये गए।
- अकबर ने भारत में एक बड़े साम्राज्य की स्थापना की, परन्तु इससे ज्यादा वह अपनी धार्मिक सहिष्णुता के लिए विख्यात है।
- अकबर ने 1575ई.में फतेहपुर सीकरी में इबादतखाना की स्थापना की। इस्लामी विद्वानों की अशिष्टता से दुखी होकर अकबर ने 1578ई.में इबादतखाना में सभी धर्मों के विद्वानों को आमंत्रित करना शुरू किया।
- 1582ई.में अकबर ने एक नवीन धर्म तोहिद-ए-इलाही'या' दीन-ए-इलाही'की स्थापना की, जो वास्तव में विभिन्न धर्मों के अच्छे तत्वों का मिश्रण था।
- अकबर ने सती प्रथा को रोकने का प्रयत्न किया, साथ ही विधवा विवाह को क़ानूनी मान्यता दी। अकबर ने लड़कों के विवाह की उम्र 16वर्ष और लड़कियों के लिए 14 वर्ष निर्धारित की।
- अकबर ने 1562में दास प्रथा का अंत किया तथा 1563में तीर्थयात्रा पर से कर को समाप्त कर दिया।
- अकबर ने 1564में जजिया कर समाप्त कर सामाजिक सदभावना को सुदृढ़ किया।

- 1579में अकबर ने मजहर'या अमोघवृत्त की घोषणा की।
- अकबर ने गुजरात विजय की स्मृति में फतेहपुर सीकरी में' बुलंद दरवाजा'का निर्माण कराया था।
- अकबर ने 76-1575ई .में सम्पूर्ण साम्राज्य को 12सूबों में बांटा था, जिनकी संख्या बराड़, खानदेश और अहमदनगर को जीतने के बाद बढ़कर 15हो गयी।
- अकबर ने सम्पूर्ण साम्राज्य में एक सरकारी भाषा (फारसी), एक समान मुद्रा प्रणाली, समान प्रशासनिक व्यवस्थातथा बात माप प्रणाली की शुरुआत की।
- अकबर ने 74-1573ई में मनसबदारी प्रथा'की शुरुआत की, जिसकी खलीफा अब्बा सईद द्वारा शुरू की गयी तथा चंगेज खां और तैमूरलंग द्वारा स्वीकृत सैनिक व्यवस्था से मिली थी।

1. अकबर के शासनकाल की निम्नलिखित घटनाओं को पढ़ें और घटनाओं का सही कालानुक्रम नीचे दिये कूटों से पता करें

1. प्रान्तों का गठन

2. घोड़ों को दागना

3. मनसबदारी व्यवस्था का प्रचलन

4. जजिया की समाप्ति

कूट:

(a) 1, 2, 3, 4 (b) 2, 1, 4, 3

(c) 3, 4, 1, 2 (d) 4, 2, 1, 3

2. मुगल सम्राट अकबर के राज्यकाल के सम्बन्ध में निम्नलिखित प्रेक्षणों पर विचार कीजिये:

1. अकबर ने मनसबदारी व्यवस्था लाकर अभिजात-वर्ग और सेना पर अपना नियन्त्रण सुदृढ़ किया।

2. मनसबदारी व्यवस्था के अन्तर्गत प्रत्येक अधिकारी की एक श्रेणी (मनसब) नियत की गई।

3. श्रेणियों को जात, सवार और चेहरा, इन तीन श्रेणियों में विभाजित किया गया। उपर्युक्त में से कौन-सा/से कथन सही है/हैं?

(a) केवल 1. (b) केवल 2

(c) 1 और 2 (d) 1 और 3

जहाँगीर (1605 ई -.1627 ई.)

- 17 अक्टूबर 1605 को अकबर की मृत्यु के पश्चात उसका पुत्र सलीम जहाँगीर के नाम से गद्दी पर बैठा।
- गद्दी पर भटकते ही सर्वप्रथम 1605 ई में जहाँगीर को अपने पुत्र खुसरो केविद्रोह का सामना करना पड़ा। जहाँगीरऔर खुसरो के बीच भेरावल नामक स्थान पर एकयुद्ध हुआ, जिसमें खुसरो पराजित हुआ।
- 1585 में जहाँगीर का विवाह आमेर के राजा भगवान दास की पुत्री तथा मानसिंह की बहनमानबाई से हुआ, खुसरोमानबाई का ही पुत्र था।
- जहाँगीर दूसरा विवाह राजा उदय सिंह की पुत्री जगत गोसाईं से हुआ था, जिसकी संतान शाहजादा खुर्रम (शाहजहाँ) था।
- मई 1611 जहाँगीर ने मेंहरुन्निसा नामक एक विधवासे विवाह किया जो, फारस के मिर्जा गयास बेग की पुत्री थी। जहाँगीर ने मेंहरुन्निसा को नूरमहल 'एवं नूरजहाँ की उपाधि दी।
- नूरजहाँ के पिता गयास बेग को वजीर का पद प्रदान कर एत्माद्दौला की उपाधि दी गई, जबकि उसके भाई आसफ खाँ को खान-ए-सामा का पद मिला।
- 1605 से1615 के मध्य कईलड़ाइयों के बाद जहाँगीर ने मेवाड़ के राजा अमर सिंह के साथ संधि कर ली।
- अकबर के समय में खानदेश तथा अहमदनगर के कुछ भागो को जीत लिया गया था, परन्तु अहमदनगर का राज्य समाप्त नहीं हुआ था। मुगलो और अहमदनगर के बीच कई युद्ध हुए और अंततः 1621 में दोनो के बीच संधि हो गई।

अध्याय- 3

1857 ई .का विद्रोह :कारण एवं परिणाम

1857 ई .में ब्रिटिश साम्राज्य के विरुद्ध विद्रोह आधुनिक भारतीयइतिहास की एक अभूतपूर्व तथा युगान्तकारी घटना है। भारत में अंग्रेजी साम्राज्य कीस्थापना छल, धोखे और विश्वसघात से हई थी। भारत में जिस तरह -ब्रिटिश सत्ता - कायम हुई उस तरह इतिहास में और कोई सत्ता कायमनहीं हुई थी।

विद्रोह के लिए उत्तरदायी कारण

गवर्नर जनरल लार्ड कैनिग के शासनकाल की एक महत्वपर्ण घटना 1857 का विद्रोह थी। इसने भारत में ब्रिटिश साम्राज्य की नींव हिला दी और कई बार ऐसा प्रतीत होने लगा था कि भारत में अंग्रेजी राज्य का अन्त हो जायेगा यहां हम 1857 ई .के विद्रोह के महत्वपूर्ण कारणों का विश्लेषण करेंगे।

राजनीतिक कारण

अंग्रेज भारत में व्यापारी के रूप में आये थे, परन्तु धीरे-धीरे उन्होंने राज्य स्थापना तथा उसके विस्तार का कार्य आरम्भ किया । धीरे-धीरे भारतीयों की राजनीतिक स्वतंत्रता का अपहरण होता गयाऔर वे अपने राजनीतिकतथा उनसे उत्पन्न अधिकारों से वंचित होते गये। जिसके फलस्वरूप उनमें बडा असंतोष फेला, जिसका विस्फोट 1857 ई .के विद्रोह के रूप में हुआ। इस क्रांति के राजनीतिक कारण निम्नलिखित थे-

)1) डलहौजी की साम्राज्यवादी नीति-:1857 की क्रांति के लिए डलहौजी की साम्राज्यशदी नीति काफी हद तक उत्तरदायी थी। उसने विजय तथा पुत्र गोद लेने कई निषेध दवारा देशी राज्यों के अपहरण का एक कुचक चलाया जिसने समपूर्ण भारत के देशी नरेशों को आतंकित कर दिया और उनके हृदय में अस्थिरता तथा आशंका का बीजारोपण कर दिया। लार्ड डलहौजी ने व्यपगत सिद्धाना या हडप-नीति को कठोरतापूर्वक अपनाकर देशी रियासतों के निःसन्तानराजाओं को उत्तराधिकार के लिये दत्तक-पुत्र लेने की आज्ञा नहीं दीऔर सतारा)1848), नागपुर)1853), झांसी)1854), बरार)1854), संभलपुर, जैतपुर, बघाट, अदपुर आदि रियासतों को कथनी के ब्रिटिश-साम्राज्य में मिला लिया। उसने1856ई .में अंग्रेजों के प्रति वफादार अददरियासत को कुशासन के आधार पर ब्रिटिश साम्राज्य में मिला लिया।

(2) मुगल सम्राट के साथ दुर्व्यवहार -:अंग्रेजों ने भारतीय शासको के साथदुर्व्यवहार भी किया। उन्होंने मुगल सम्राट को नजर देना व सम्मान प्रदर्शित करनाबन्द कर दिया इतना ही नहीं लार्ड डलहौजी ने मुगल सम्राट की उपाधि को समाप्त करने कानिश्चय किया उसने बहादुरशाहके सबसे बड़े पुत्र मिर्जा जवाबख्त को युवराज स्वीकार करने इंकार कर दिया और बहादुरशाह से अपने पैतृक निवास स्थान लाल किले को खाली कर कुतुब में रहने के लिए कहा।

(3) ब्रिटिश पदाधिकारियों के वक्तव्य-: डलहौजी की साम्राज्यदी नीति के साथ-साथ कुछ अंग्रेजअधिकारियों ने ऐसे वक्तव्य दिये जिससे देशी नरेश बहुत आतंकित हो गये और अपने भावी अस्तित्व के सम्बन्ध मे पूर्ण रूप से निराश हो उठे।

)4) नाना साहब और रानी लक्ष्मी बाई का असन्तोष -:झांसी की रानी लक्ष्मी बाई तथा पेशवा बाजीराव द्वितीय केदत्तक पुत्र नाना साहब अंग्रेजों के व्यवहार से बहुत नाराज थे। अंग्रेजों ने झांसीके राजा-गंगाधर राव के दत्तकपुत्र दामोदर राव को उत्तराधिकार से वंचित करके झांसी राज्य को कथनी के राज्य में शामिल कर लिया था। इस अत्याचार को रानी लक्ष्मीबाई सहन न कर सकी और क्रान्ति के समय उसने विद्रोहियों का साथ दिया।

)5) अवध का विलय और नवाब के साथ अत्याचार -:अंग्रेजों ने बलपूर्वक लखनऊ पर अधिकार करके नबाव वाजिद अली शाह को निर्वासित कर दिया था और निर्लज्जतापूर्वक महलों को लूटा था । बेगमों के साथ बहुत अपमानजनक व्यवहार किया गया था । इससे अवध के सभी वर्ग के लोगों में बडा असन्तोष फैला और अवध क्रांतिकारियों का केन्द्र बन गया।

)6) प्राचीन राजनीतिक व्यवस्था का विध्वंस -:अंग्रेजों की विजय के फलस्वरूप प्राचीन राजनीतिक व्यवस्था पूर्ण रूप से ध्वस्त हो गई थी। ब्रिटिश शासन से पहले भारतवासी राज्य की नीति को पूरी तरह प्राभावित करते थे परन्तु अब वे इससे वंचित हो गये। अब केवल अंग्रेज ही भारतीयों के भाग्य के निर्माता हो गये।

)7) अंग्रेजों के प्रति विदेशी भावना-: भारतीय जनता अंग्रेजों से इसलिए भी असन्तुष्ट थी क्योंकि वे समझते थे कि उनके शासक उनसे हजारों मील दूर रहते हैं। तुर्क, अफगान और मुगल भी भारत में विदेशी थे लेकिन वे भारत में ही बस गये थे और इस देश को उन्होंने अपना देश बना लिया था। जबकि अंग्रेजों ने ऐसा कोई काम नहीं किया था। अतएव भारतीयों के हृदय और मस्तिष्क से अंग्रेजों के प्रति विदेशी की भावना नहीं निकल सकी थी।

)8) उच्च वर्ग में असंतोष-: देशी राज्यों के नष्ट हो जाने से न केवल उनके नरेशों का विनाश हुआ वरन् उच्च वर्ग के लोगों की स्थिति पर भी बड़ा घातक प्रहार हुआ।

<u>प्रशासनिक कारण</u>-

)1) नवीन शासन-पद्धति को समझने में कठिनाई होना-: भारतीय जिस शासन को सदियों से देखते आ रहे थे, वह समाप्त कर दिया गया था। नई शासन-पद्धति को समझने मेंउन्हें कठिनाई आ रही थी तथा, उसे वे शंका की दृष्टि से देखते थे।

)2) भारतीयों को प्रशासनिक सेवाओं से अलग रखने की नीति-: अंग्रेजों ने शुरू से ही भारतीयों को प्रशासनिक सेवाओं में शामिल न कर भेद-भाव पूर्ण नीति अपनाई। लार्ड कार्नवालिस का भारतीयों की कार्यकुशलता और ईमानदारी पर विश्वास नहीं था। अत :उसने उच्च पदों पर भारतीयों के स्थान पर अंग्रेजों कोनियुक्त कर दिया। परिणामत :भारतीयों के लिए उच्च पदों के द्वार बन्द हो गये। यद्यपि।833 ई .के कम्पनी के चार्टर एक्ट में यह आवश्वासन दिया गया था कि धर्म, वंश, जन्म, रंग या अन्य किसी आधार पर सार्वजनिक सेवाओं में भर्ती के लिए कोई भेदभाव नहीं बरता जाएगा, परन्तु अंग्रेजों ने इस सिद्धान्त का पालन नहीं किया। सैनिक और असैनिक सभी सार्वजनिक सेवाओं में उच्च पद यूरोपियन व्यक्तियों के लिए ही सुरक्षित रखे गये थे। सेना में एक भारतीय का सबसे बड़ा पद सूबेदार का होता था जिसे 60 या 70 रूपये प्रति माह वेतन मिलता था। असैनिक सेवाओं में एक भारतीय को मिल सकने वाला सबसे बड़ा पद सदर अमीन का था जिसे 500/ - रूपये प्रति माह वेतन मिलता था। उच्च पद देना अंग्रेज अपना एकाधिकार समझते थे।

)3) ब्रिटिश न्याय व्यवस्था से भारतीयों में असंतोष-: ब्रिटिश न्याय प्रशासन एक भिन्न प्रशासनिक व्यवस्था का प्रतीक था। विधि प्रणाली और सम्पत्ति अधिकार पूरी तरह से नये थे। न्याय प्रणाली में अत्यधिक धन तथा समय नष्ट होता था और फिर भी निर्णय अनिश्चित था। भारतीय इस न्याय व्यवस्था को पसन्द नहीं करते थे। अगर एक छोटा सा किसान भी किसी जमींदार की शिकायत करता था तो जमींदार को न्यायालय में जाना पडता था। इस प्रकार सम्मानित व्यक्ति अंग्रेजी न्यायालयों से असंतुष्ट थे।

)4) दोषपूर्ण भूराजस्व प्रणाली-: भूराजस्व प्रणाली को नियमित करने के नाम पर अंग्रेजों ने अनेक जमींदारों के पट्टों की छानबीन की। जिन लोगों के पास जमीन के पट्टे नहीं मिले, उनकी जमीनें छीन ली गई। बम्बई के प्रसिद्ध इमाम आयोग ने लगभग बीस हजार जागीरें जल कर ली थी। लार्ड बैन्टिक ने तो माफी की भूमि भी छीन ली। इस प्रकार कुलीन वर्ग को अपनी सम्पत्ति व आय से हाथ धोना पड़ा। भूमि अपहरण की नीति के कारण तालुकेदारों में बड़ा असंतोष फैला और क्रांति में इन लोगों ने सक्रिय भाग लिया। किसानों के कल्याण एवं लाभ के नाम पर स्थाई बन्दोबस्त, रैयतवाडी व महलवाडी प्रणाली लागू की गई थी और हर बार किसानों से पहले की अपेक्षा अधिक लगान वसूल किया गया, जिसके कारण किसान लगातार निर्धन होकर साधारण मजदूर बनता गया। अंग्रेजों की लगान-नीति के विरूद्ध इतना प्रबल विरोध था कि अनेक स्थानों परबिना सेना की सहायता से लगान जमा नहीं किया जा सकता था।

(5) शक्तिशाली ब्रिटिश अधिकारी वर्ग का विकास -:भारत में कम्पनी शासन की सर्वोच्चता स्थापित होने के साथ ही प्रशासन में एक शक्तिशाली ब्रिटिश अधिकारी वर्ग का उदय हुआ। यह वर्ग भारतीयों से मिलना पसन्द नहीं करता था और हर प्रकार से उन्हें अपमानित करता था। अंग्रेजों के इस प्रजाति भेदभाव की नीति से भारतीय क्रुद्ध हो उठे और उनका यह क्रोध।857 ई .के विद्रोह के रूप में व्यक्त हुआ।

)6) शिक्षित भारतीयों में ब्रिटिश शासन से असंतोष-: शिक्षित भारतीयों को यह आशा थी कि शिक्षा के प्रसार के साथ-साथ उन्हें राजनीतिक प्रशासनिक अधिकार प्राप्त हो जायेंगे। लेकिन अंग्रेजों की ऐसी कोई इच्छा नहीं थी।

अध्याय – 4

सामाजिक – धार्मिक सुधार आंदोलन (19 वींसदी)

उदय के कारण स्वरूप सीमांए परिणाम प्रमुख सुधारक एवं संस्थांए

उदय के कारण आधुनिक शिक्षा प्राप्त बुद्धिजीवियों में चेतना आई की औपनिवेशिक शासन का मूल कारण भारतीय सामाजिक सांस्कृतिक ढांचे में मौजूद कुरीतियां हैं अतः उन्हें दूर करना चाहिए इस क्रम में सामाजिक सुधार आंदोलन प्रारंभ हुआ स्थायीकरण की प्रवृत्ति ने भी भारतीयों को अपने धर्म एवं समाज को बचाने के लिए प्रेरित किया वस्तुत ईसाई मिशनरी भारतीयों के पिछड़ेपन का कारण उनके परंपरागत धर्म को बताते थे अतः भारतीय धर्म और समाज सुधार समाज को कर्मकांड मुक्त करने पर बल दिया

पश्चिमी मानवतावादी चिंतन ने भारतीयों में सुधारों के प्रति चेतना जागृत की वस्तुत यूरोप के आधुनिक चिंतन में भारतीयों को भी मानवतावादी दृष्टिकोण से युक्त किया इसी क्रम में सुधार को ने मानव की एकता पर बल देते हुए छुआछूत अस्पृश्यता पर चोट की पत्र-पत्रिकाओं ने भी सुधार आंदोलन को प्रेरित किया। वस्तुतः पत्र-पत्रिकाओं में अंग्रेजों द्वारा भारतीयों के प्रति किए जाने वाले अपमान जनक व्यवहारों का उल्लेख रहता था फलतः अपने धर्म और समाज में व्याप्त सती प्रथा ,छुआछूत जैसीपरंपराओं को समाप्त कर समाज को स्वच्छ बनाकर उस पर अपमान से बचने का प्रयास किया गया। इसी क्रम में सामाजिक धार्मिक सुधार आंदोलन शुरू हुआ

स्वरूप

1) मूल्य का सामाजिक सुधार स्वरूप

इस आंदोलन का मूल लक्ष्य सामाजिक सुधार करना था वस्तुतः समाज में मौजूद कुरीतियों का समर्थन धर्म के आधार पर किया जाता था अतः धर्म में सुधार के बगैर सामाजिक सुधार संभव नहीं था इस दृष्टि से यह मूलतः सामाजिक सुधार आंदोलन था।

2 मध्यम वर्गीय स्वरूप

यह आंदोलन मध्यम वर्ग के स्वरूप से मुक्त दिखाई देता है वस्तुतः सामाजिक धार्मिक सुधार आंदोलन का नेतृत्व मध्यमवर्गीय के हाथों में था आंदोलन का प्रसार भी नगरीय क्षेत्रों में रहा प्रचार प्रसार हेतु सुधारको ने विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं और पुस्तकों का प्रकाशन किया और जिसकी पहुंच मध्यमवर्ग तक थी इस तरह सुधार को द्वारा उठाई गई कुछ मांगे जैसे सती प्रथा बहू पत्नी प्रथा की समाप्ति प्राय से संबंधित है इस राष्ट्रीय से यहां आंदोलन का स्वरूप मध्यमवर्गीय दिखाई देता है

। दूसरी तरफ सुधार को ने समाज में अंधविश्वास वर्ण व्यवस्था छुआछूत की भावना और धार्मिक आडंबर पर चोट किया तथा मानव की क्षमता पर बल दिया फलक में मानव की एकता का मार्ग प्रशस्त हुआ शिक्षा पर बल देने से जागरूकता बढ़ी जो राष्ट्रीय चेतना के विकास में सहायक सिद्ध हुई इस दृष्टि से यह आंदोलन लोकप्रिय स्वरूप से मुक्त हो जाता है।

3.शैक्षणिकस्वरूप

यह आंदोलन शैक्षणिक स्वरूप से मुक्त था प्राय सभी सुधार को ने शिक्षा पर बल दिया इसी क्रम में राजा राममोहन राय ने कोलकाता में हिंदू कॉलेज की स्थापना की तो आर्य समाज ने डीएवी कॉलेज की स्थापना की जो सैयद अहमद खाने अलीगढ़ में मुस्लिम कॉलेज की स्थापना की इतना ही नहीं सुधार को ने महिला शिक्षा पर बल दिया विभिन्न पुस्तकों में पत्र-पत्रिकाओं का प्रकाशन किया जो आंदोलन के शैक्षिक स्वरूप को उजागर करता है।

4. नारीमुक्ति का स्वरूप

।9वीं सदी के सामाजिक धार्मिक सुधार आंदोलन के केंद्र में नारी मुक्ति का चिंतन दिखाई देता है वस्तुतः अनेक सामाजिक कुरीतियों जैसे विधवा विवाह बाल विवाह सती प्रथा देवदासी प्रथा पर्दा प्रथा आदि नारी से संबंधित हैं अर्थात यह नारी अधिकारों को सीमित करती थी अतः सुधार कोने इन कुरीतियों पर चोट कर नारी मुक्ति का प्रयास किया इसी क्रम में सुधार को के प्रयास से सती प्रथा निरोधक कानून बाल हत्या निरोधक कानून विधवा पुनर्विवाह अधिनियम आदि का निर्माण हुआ साथ ही सुधार को ने नारी शिक्षा पर बल देकर उसे जागरूक और आत्मनिर्भर बनाने का प्रयास किया इस दृष्टि से यह आंदोलन नारी मुक्ति स्वरूप से मुक्त दिखाई देता है।

5. सुधारवादीस्वरूप

यह आंदोलन क्रांतिकारी नहीं सुधारवादी स्वरूप लिए हुए था वस्तुतः सुधार को ने सामाजिक धार्मिक बुराइयों को दूर करने के क्रम में अपने धर्म के आडंबरो पर चोट की किंतु उन्होंने कहीं भी अपने धर्म को छोड़ने या नया धर्म चलाने की बात नहीं कि राजा राममोहन राय खोया सैयद अहमद खान सभी ने अपने धर्म में रहते हुए सुधारों की बात की।

6. मध्यकालीन भारतीय धर्म सुधार आंदोलन से भिन्न स्वरूप

।9वीं सदी का सामाजिक धार्मिक सुधार आंदोलन ।5 वी सदी-।6सदी के मध्य कालीन कवि नानक जैसे लोगों द्वारा चलाए जा रहे सुधार आंदोलन से इस रूप से भिन्न है कि उन्नीसवीं सदी में कानून निर्माण द्वारा सुधारों पर बल दिया गया और इन सुधारों में पश्चिमी प्रेरणा भी शामिल थी साथ ही सुधारको ने शिक्षण संस्थानों की स्थापना की।

7.भारतीय पुन जागिरण के रूप में

।9 वी सदी का सामाजिक धार्मिक सुधार आंदोलन अपने कुछ विशेषताओं के आधार पर यूरोपीय पुनर्जागरण के समान दिखाई देता है वस्तुतः भारतीय पुनर्जागरण में मानवतावाद तर्क व विवेक पर बल दिया गया है तथा कर्मकांड की आलोचना की गई इसी तरह भारत में भी समाज सुधार कोने मानवतावाद पर बल देते हुए कर्मकांड की आलोचना की । अक्षय कुमार दत्त ने चिकित्सा विज्ञान के तर्क के आधार पर बाल विभाग को एक समस्या बताया तो साथ ही सुधार को ने आधुनिक शिक्षा पर बल देते हुए शिक्षा केंद्रों की स्थापना की इस दृष्टि से सुधार आंदोलन को भारतीय पुनर्जागरण के रूप में देखा जा सकता है।

अध्याय – 8

गाँधी वाद

गांधीवाद)1869-1948)

पृष्ठ भूमि	विचार धारा	कार्यपद्धति /रणनीति	प्र
	सत्याग्रह	नियंत्रितजन नांदोलन पर बल	रोलट सत्याग्रह
	साधन-साध्य की पवित्रता	आंदोलन केसक्रिय एवंनिष्क्रिय दौर में विश्वास	खिलाफत आंदोलन
	वर्ग समन्वय	दबाव-समझौता - दबाव की रणनीति (संघर्ष विराम - संघर्ष)	असहयोग आंदोलन
	सर्वोदय	साधारण जीवन शैली एवंरचनात्मक कार्य	सविनयअवज्ञा आंदोलन
	सामाजिक एवंशिक्षा संबंधी विचार		भारत छोड़ोआंदोलन
	आर्थिक सिद्धांत		

गांधी की विचारधारा :

(i) **सत्याग्रह** -: सत्याग्रह सत्य एवं अहिंसा पर आधारित एक शक्ति है जोविरोधी हृदय पर विजय प्राप्त करती है। दरअसल यह भौतिक शक्ति को नैतिक शक्ति के आगे झुकाने की कला है। इसमें शामिल अहिंसा का सिद्धांत व्यापारी, कृषक, मजदूर परिवार के सभी सदस्यों और समाज के सभी वर्गों को आकर्षित करता है। इसके माध्यम से जन भागीदारी बढ़ती है और इसी जनशक्ति के माध्यम से साम्राज्यवादी शक्ति का मुकाबला किया जा सकता है।

सत्याग्रह के अंतर्गत धरना प्रदर्शन, असहयोग, जेल भरो जैसे कार्यक्रम शामिल है और इसमें अनिवार्य रूप से अहिंसाकी अवधारणा शामिल है तथा विपक्षी के हृदय परिवर्तन पर बल दिया जाता है जबकि उग्रवादी आंदोलन की निष्क्रिय प्रतिरोध की पद्धति ने विरोधी को पराजित करने का भाव होता है ।जिसमें हिंसा भी हो सकती है। इस तरह सत्याग्रह की अवधारणा निष्क्रिय प्रतिरोध की पद्धति से श्रेष्ठ है।

)ii) **साधन-साध्य की पवित्रता:** गांधी के अनुसारसाधन बीज है और साध्य वृक्ष है। इसलिए उन्होंने दोनों की पवित्रता पर बल देते हुए साधन की पवित्रता पर सर्वाधिक बल दिया। वस्तुतः साधन की पवित्रता पर बल देकर जनशक्ति को नैतिक शक्ति से युक्त कर साम्राज्यवादी शक्ति के सामने मजबूती खड़ा किया जा सकता था। इसी अवधारणा के कारण गांधी ने सुभाषचन्द्र बोस के उस दृष्टिकोण का समर्थन नहीं किया जिसमें फासीवादी शक्तियों का सहयोग करे लेकर स्वतंत्रता प्राप्ति की बात की जा रही थी।

गांधी के साधन की पवित्रता का चिंतन पश्चिमी राजनीतिक विचारक मैक्यावेली के चिंतन से भिन्न हो जाता है क्योंकि मैक्यावेली ने साध्य को सर्वाधिक महत्वपूर्ण माना, चाहे इसकी पूर्ति के लिए साधन कोई भी हो।

)iii) **सर्वोदय की अवधारणा** -: गांधी ने समाज के सभी व्यक्तियों केउन्नति की बात की। वस्तुतः गांधी जॉन रस्किन की पुस्तक 'Unto this last' (1860) से प्रभावित थे जहाँ सभी के उन्नति की बात की गई। जॉन रस्किन की शिक्षाओं में सर्वप्रमुख बिंदु थे- :

- व्यक्ति की भलाई सबकी भलाई में निहित है।
- एकवकीलकाकार्य और नाई का कार्य बराबर है अत :सब को जीविकोपार्जन का अधिकार है और सभी के आजीविका के साधनसम्मानित है। अत :कार्य के आधार पर कोई उच्च और निम्न नहीं है।

गांधी इन्हीं विचारों से प्रेरित होकर सर्वोदय पर बल देते हैं जो पेंशन के उपयोगितावादी सिद्धांत से भिन्न हो जाता है। उपयोगितावादी सिद्धांत में अधिकतम लोगों के अधिकतम सुख को पूरा करने की बात की गयी जबकि सर्वोदय में सभी की उन्नति की बात की गयी। इस तरह गांधी का सर्वोदय सिद्धांत वर्तमान की अनेक समस्याओं जैसे -गरीबी, छुआछुत आदि का समाधान प्रस्तुत करता है।

)iv) **वर्ग समन्वय** : गांधी ने विभिन्न वर्गों के आपसी सहयोग और समन्वयपर बल दिया। वस्तुतः सभी को सर्वसमावेशी नीति के तहत एकजुट कर जनशक्ति को बढ़ाकर आंदोलन

सशक्त बनाने का प्रयास किया। इस तरह वर्ग समन्वय के माध्यम से औपनिवेशिक शक्ति के समक्ष जनशक्ति को बढ़ाकर जन अधिकारों की प्राप्ति पर बल दिया। इसी क्रम में गांधी ने किसान, जमींदार ,मजदूर, पूँजीपति, हिंदू-मुस्लिम आदि के सहयोग पर बल दिया। गांधी का यह वर्ग समन्वय का सिद्धांत मार्क्स के सिद्धांतों के विपरीत दिखाई देता है वस्तुतः मार्क्स ने वर्ग संघर्ष का सिद्धांत दिया था।

)v) सामाजिक एवं शिक्षा संबंधी सिद्धांत : गांधी ने समाज में मौजूद ऊँच-नीच, छुआछूतऔर लैंगिक भेद की समाप्ति पर बल दिया। इसी में उन्होंने अछूतोद्धार कार्यक्रम पर क्रम बल दिया और उनके मंदिर प्रवेश के लिए प्रयास किया। गांधी मंदिर प्रवेश के माध्यम से के सामाजिक-आर्थिक उन्नति का प्रयास कर रहे थे। साथ ही, उन्होंने महिला सशक्तिकरण पर बल देते हुए महिलाओं को आत्मनिर्भर होने एवं शिक्षित करने पर बल दिया । यही वजह है कि राष्ट्रीय आंदोलन में महिलाओं की भूमिका लगातार बढ़ती गई।

गांधी ने शिक्षा के संदर्भ में कहा कि शिक्षा स्वयं को पहचानने की कला है। उन्होंने मातृभाषा पर बल देते हुए शिक्षा को उत्पादन कार्य से जोड़कर शिक्षित बेरोजगारी करने का उपाय बताया। उनकी बुनियादी शिक्षा योजना)वर्धा शिक्षा योजना (इसी संदर्भ में थी।

)vii(आर्थिक सिद्धांत)ट्रस्टीशिप सिद्धांत:(गांधी ने इस सिद्धांत के तहत कहा कि स्वामित्व निजी होते हुए भी स्वामी उसे सार्वजनिक उपयोग के लिए सुलभ कराए अर्थात्मालिक उस संपत्ति का संरक्षक मात्र है। इस तरह गांधी ने मालिक मजदूर सहयोग पर बल दिया।

गांधी ने अपनी पुस्तक हिंद-स्वराज' (1909) में आधुनिक औद्योगीकरण की आलोचना की । वस्तुत :लघु और कुटीर उद्योगों के पतन के संदर्भ में वे ऐसा कह रहेथे। चूंकि भारत की बहुसंख्यक आबादीगांवों में रह रही थी और इन उद्योगों के पतन से वहपिछड़ रही थी।

गांधी की कार्यपद्धति :

)i) आंदोलन के सक्रिय एवं निष्क्रिय दौर में विश्वास : गांधी के अनुसार जनआंदोलन लम्बे समय तक नहीं चल सकताक्योंकि जनता के दमन सहने की शक्ति असीमित नहीं होती। अतः आंदोलन को दमन से पूर्व ही वापस लेना चाहिए। इस तरह जन आंदोलन की ऊर्जा समाप्त होने से पहले ही आंदोलन स्थागित करना चाहिए ताकि आंदोलन को निराशा से बचाया जा सके। दूसरी तरफ, आंदोलन वापसी अर्थात् निष्क्रिय दौर में रचनात्मक कार्य करना चाहिए जिससे की जनता की गतिशीलता बनी रहे और आंदोलन पुन :शुरू करने तक जनताऊर्जावान हो जाए।

)ii) दबाव-समझौता- दबाव की रणनीति संघर्ष विराम-संघर्ष की रणनीति गांधी ने इस रणनीति के तहत जनआंदोलन के माध्यम से सरकार पर दबाव डालकर उससेसमझौते के लिए बाध्य किया और जो माँगें बची रह जाए उसके लिए पुन : आंदोलन कर दबाव बनाने कीरणनीति पर कार्य किया। इसे ही संघर्ष विराम -संघर्ष की रणनीति' कहते हैं यह रणनीति गांधीवादी आंदोलन में देखी जा सकती है।

किंतु 'संघर्ष विराम -संघर्ष' की यह रणनीति समग्र राष्ट्रीय आंदोलन की व्याख्या नहीं करती। वस्तुतः राष्ट्रीय आंदोलन भिन्न-भिन्न विचारधाराओं, दलों एवं व्यक्तियों के माध्यम से चल रहा था। गांधीवादी रणनीति तो इस राष्ट्रीय आंदोलन का एक हिस्सा मात्र थी। इसलिए संघर्ष विराम-संघर्ष की रणनीति कांग्रेस के नेतृत्व में चल रहे गांधीवादी आंदोलन की व्याख्या तो करती है, समग्र राष्ट्रीय आंदोलन कीनहीं

संघर्ष विराम-संघर्ष की रणनीति

गांधीवादी रणनीति है समग्र राष्ट्रीय आंदोलन पर लागू नहीं होती है

)iii) नियंत्रित जन आंदोलन पर बल-: गांधी नेसाम्राज्यवादीशक्ति को झुकाने के लिए जनशक्ति पर बल दिया तो साथ ही जनआंदोलन पर नियंत्रण लगाया। वस्तुतः गांधी ने सत्याग्रह, अहिंसा, साधन -साध्य की पवित्रता के माध्यम सेजनता पर अंकुश लगाया । तो साथ ही आंदोलन के कार्यक्रम को रुपरेखा तैयार कर जनता को इसके दायरे में रहकर कार्य करने के लिए कहा क्योंकि अनियंत्रित जनआंदोलन से हिंसा की संभावना भी और हिंसा से सभी वर्गों की भागीदारी हतोत्साहित होती। दूसरी तरफ, हिंसा के बहाने ब्रिटिश सरकार को भी भारतीयों का दमन करने का अवसर मिल जाता। इसलिए गांधी ने नियंत्रित जनआंदोलन पर बल दिया। दूसरी तरफ, गांधी आंदोलन में जनता की भागीदारी बढ़ाना भी चाहते थे। नियंत्रण के साथ जन भागीदारी बढ़ाना गांधीवादी रणनीति का विरोधाभास दिखाई पड़ता है। इसके बावजूद भी गांधी जनता के बीच अपनी लोकप्रियता बनाए रख सके और इसका आधार था साधारण जीवनशैली एवं रचनात्मक कार्य।

(iv) साधारण जीवनशैली एवं रचनात्मक कार्य :गांधी ने साधारण जीवनशैली अपनाया

राजस्थान का इतिहास

अध्याय – 1

राजस्थान इतिहास को जानने के स्त्रोत

प्रिय दोस्तों, राजस्थान के इतिहास का अध्ययन करने से पहले हम इसको जानने के प्राचीनतम स्रोतों का अध्ययन करेंगे –

प्राचीन इतिहास के स्त्रोत-पुरातात्वीक एवं साहित्यिक

राजस्थान इतिहास को जानने के स्त्रोतः-

- इतिहास का शाब्दिक अर्थ- ऐसा निश्चित रूप से हुआ है। इतिहास के जनक यूनान के हेरोडोटस को माना जाता हैं लगभग 2500 वर्ष पूर्व उन्होने " हिस्टोरिका" नामक ग्रन्थ की रचना की। इस ग्रन्थ में उन्होने भारत का उल्लेख भी किया हैं।
- भारतीय इतिहास के जनक महाभारत के लेखक वेद व्यास माने जाते है। महाभारत का प्राचीन नाम "जय सहिता" था।
- राजस्थान इतिहास के जनक कर्नल जेम्सहाड कहे जाते हैं। वे 1818 से 1822 के मध्य मेवाड़ (उदयपुर) प्राप्त के पोलिटिकल एजेन्ट थे उन्होने घोडे पर धूम-धूम कर राजस्थान के इतिहास को लिखा।

  अतः कर्नल टाड को "घोडे वाले बाबा" कहा जाता है। इन्होने "एनाल्स एण्ड एंटीक्वीटीज आफ राजस्थान" नामक पुस्तकालय का लन्दन में 1829 में प्रकाशन करवाया।
- गौरी शंकर हिराचन्द ओझा (जी.एच. ओझा) ने इसका सर्वप्रथम हिन्दी में अनुवाद करवाया। इस पुस्तक का दूसरा नाम "सेंटर्ल एण्ड वेस्टर्न राजपूत स्टेट आफ इंडिया" है।
- कर्नल जेम्स टाड की एक अनय पुस्तक "ट्रेवल इन वेस्टन इण्डिया" का इसकी मृत्यु के पश्चात् 1837 में इनकी पत्नी ने प्रकाशन करवाया।

अभिलेख एवं प्रशस्तियाँ

पत्थर या धातु की सतह पर उकेरे गए लेखों को अभिलेखमें सम्मिलित किया जाता है। अभिलेखों में शिलालेख, स्तम्भ लेख, मूर्ति लेख, गुहा लेख आदि को सम्मिलित किया जाता है। तिथि युक्त एवं समसामयिक होने के कारण पुरातात्विक स्रोतों के अन्तर्गत अभिलेख सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण है।
प्रारम्भिक अभिलेखों की भाषा संस्कृत थी जबकि मध्यकाल में इनमें उर्दू, फारसी वराजस्थानी भाषा का प्रयोग भी हुआ।
अभिलेखों के अध्ययन को एपिग्राफी कहा जाता है।

- भारत में प्राचीनतम अभिलेख सम्राट अशोक मौर्य के हैं जिनकी भाषा प्राकृत एवं मगधी तथा लिपि ब्राह्मी मिलती है।

शक शासक रूद्रदामन का जूनागढ़ अभिलेख भारत का पहला संस्कृत अभिलेख है।

- राजस्थान के अभिलेखों की मुख्य भाषा संस्कृत एवं राजस्थानी है तथा इनकी लिपि महाजनी एवं हर्ष लिपि है।

फारसी भाषा मे लिखा सबसे पुराना लेख अजमेर के ढाई दिन के झोंपड़े के गुंबज की दीवार के पीछे लिखा हुआ मिला है। यह लेख लगभग 1200 ई.का है।

अशोक के अभिलेख :

- मौर्य सम्राट अशोक के दो अभिलेख भाब्रू अभिलेख तथा बैराठ अभिलेख बैराठ की पहाड़ी से मिले है।
- भाब्रू अभिलेख की खोज केप्टन बर्ट द्वारा बीजक की पहाड़ी से की गई। इस अभिलेख सेअशोक के बौद्ध धर्म के अनुयायी होने तथा राजस्थान में मौर्य शासन होने की जानकारी मिलती है।
- अशोक का भाब्रू अभिलेख वर्तमान में कलकत्ता संग्रहालय में सुरक्षित है।

बड़ली का अभिलेख :

- यह राजस्थान का सबसे प्राचीनतम अभिलेख है। 443 ई.पूर्व का यह अभिलेख अजमेर के बड़ली गाँव के मिलोत माता मंदिर से पं. गौरीशंकर हीराचन्द ओझा को प्राप्त हुआ।

वर्तमान में यह अजमेर संग्रहालय में सुरक्षित है।

बसंतगढ़ अभिलेख (625 ई.):

- राजा वर्मलात के समय का यह अभिलेख बसंतगढ़ सिरोही से प्राप्त हुआ है।

मेवाड़ राज्य के वार्षिक आय-व्यय का ज्ञान जिन अभिलेखों से होता है उन्हें पड़ाखा एवं पक्का खाता के नाम से जाना जाता है। इसमें लगान,शहर पट्टा, जागीर से प्राप्त राशि, प्रशासनिक तंत्र, न्यायपालिका पर होने वाले खर्च आदि का उल्लेख मिलता है।

सबसे प्राचीन बही राणा राजसिह (1652 - 1680 ई.) के समय की है।

बहियों के माध्यम से त्योहार और उन्हें मनाने की विधि, विवाह आदि अवसरों पर होने वाले खर्च तथा विभिन्न वस्तुओं के मूल्य का लेखा-जोखा प्राप्त होता है।
मुल्की :- इससे राज्यों की आय, परगनों एवं गाँवों की आर्थिक स्थित, युद्ध अभियान, अधिकारियों एवं कर्मचारियों के वेतन आदि का ज्ञान होता है।

अध्याय – 2

राजस्थान की प्राचीन सभ्यताएं

अब हम राजस्थान की प्राचीन सभ्यताएं पढ़ते है।

1. कालीबंगा की सभ्यता -

प्रिय छात्रों किसी भी सभ्यता का विकास किसी नदी के किनारे होता है क्योंकि जल ही जीवन है जल की आवश्यकता खेती के लिए और अन्य उपयोगों के लिए की पड़ती है। इसलिए कालीबंगा की सभ्यता एक नदी किनारे बसी हुई थी नदी का नाम है - सरस्वती नदी। इसे , द्रेषनदी, मृतनदी, नटनदी के नाम से भी जानते है।

यह सभ्यता हनुमानगढ़ जिले में विकसित हुई थी हनुमानगढ़ जिले में एक अन्य सभ्यता जिसे पीलीबंगा की सभ्यता कहते है विकसित हुई।

इस सभ्यता की खोज -

इस सभ्यता की सबसे पहले जानकारी देने वाले एक पुरातत्ववेत्ता एवं भाषा शास्त्री लुईतैसीतोरी थे। इन्होंने ही यह सभ्यता के बारे में सबसे पहले परिचय दिया लेकिन इस सभ्यता की तरफ किसी का पूर्णरूप सेध्या न नहीं था इसलिए इसकी खोजने ही हो पाई।

इस सभ्यता के खोजकर्ता अमलानंद घोष है। उन्होंने 1952 में सबसे पहले इस सभ्यता की खोज की थी।

इनके बाद में यह सभ्यता की खोज दो अन्य व्यक्तियों के द्वारा भी की गई थी जो 1961 से 1969 तक चली थी।
1.बृजवासीलाल
2.बीके (बालकृष्ण) थापर इन्हीं दोनों ने इस सभ्यता की विस्तृत रूप से खोज की थी

लुईसपी. तैसीतोरी के बारे में -

ये इटली के पुदीने कस्बे के निवासी थे इनका जन्म सन 1887 में हुआ। और यह 1900 ईस्वी में भारत आए ।यह बीकानेर राज्य में सबसे पहले आए । उस समय के तत्कालीन राजा महाराजागंगा सिह जीने इन्हें अपने राज्य का सभी प्रकार का चारण साहित्य लिखने की जिम्मेदारी दी ।बीकानेर संग्रहालय भी इन्होंने ही बनवाया है ये एक भाषा शास्त्री एवं पुरातत्ववेत्ता थे उन्होंने राजस्थानी भाषा के दो प्रकार बताए थे।

1. पूर्वी राजस्थानी 2. पश्चिमी राजस्थानी

इस सभ्यता का काल क्रम कार्बन डेटिंग पद्धति के अनुसार 2350 ईसा पूर्व से 1750 ईसा पूर्व माना जाता है।

कालीबंगा शब्द "सिधीभाषा" का एक शब्द है जिसका शाब्दिक अर्थ होता है - "काले रंग की चूड़ियां"। इस स्थल से काले रंग की चूड़ियों की बहुत सारी ढेर प्राप्त हुए इसलिए इस सभ्यता को कालीबंगा सभ्यता नाम दिया गया।

कालीबंगा की सभ्यता है एक भारत की ऐसी पहली सभ्यता स्थल है जो स्वतंत्रता के बाद खोजी गई थी। यह एक कांस्य युगीन सभ्यता है।

हनुमानगढ़ जिले से इस सभ्यता से संबंधित जो भी वस्तुएं प्राप्त हुई है उनको सुरक्षित रखने के लिए राजस्थान सरकार के द्वारा 1985 - 86 में कालीबंगा संग्रहालय की स्थापना की गई थी ।यह संग्रहालय हनुमानगढ़ जिले में स्थित है।

<u>यह सभ्यता की विशेषताएं -</u>

इस सभ्यता की सड़कें एक दूसरे को समकोण पर काटती थी इसलिए यहां पर मकान बनाने की पद्धति को "ऑक्सफोर्ड पद्धति" कहते हैं। इसी पद्धति को जाल पद्धति, ग्रीक, चेम्सफोर्ड पद्धति के नाम से भी जानते हैं।

मकान कच्ची एवं पक्की ईंट के बने हुए थे, आरम्भयें कच्ची ईटे थीं इसलिए इस सभ्यता को दीन हीन सभ्यता भी कहते है इन ईटों का आकार 30 * 15 * 7.5 है।

इन मकानों की खिड़की एवं दरवाजे पीछे की ओर होते थे

यहां पर जो नालियां बनी हुई थी वह लकड़ी (काष्ठ) की बनी होती थी। आगे चलकर इन्हीं नालियों का निर्माण पक्की ईटों से होता था (विश्व में एकमात्र ऐसा स्थान जहां लकड़ियों की बनी नालियां मिली है वह कालीबंगा स्थल है)

विश्व की प्राचीनतम जुते हुए खेत के प्रमाण इसी सभ्यता से मिलते हैं।

यहां पर मिले हुए मकानों के अंदर की दीवारों में दरारें मिलती हैं इसलिए माना जाता है कि विश्व में प्राचीनतम भूकंपके प्रमाण यहीं से प्राप्त होते हैं।

यहां के लोग एक साथ में दो फसलें करते थे अर्थात फसलों के होने के प्रमाण भी यहीं सेमिलते हैं जौ और गेहू।

यहां पर उत्खनन के दौरान यज्ञकुंड / अग्नि वेदिकाएं प्राप्त हुए हैं यहां के लोग बलिप्रथा में भी विश्वास रखते थे।

इस सभ्यता का पर यह जानवर कुत्ता था। यह सभ्यता के लोग ऊंट से भी परिचित थे इसके अलावा गाय, भैंस, बकरी, घोड़ा से भी परिचित थे।
विश्व में प्राचीनतम नगर के प्रमाण यहीं पर मिले हैं इसलिए इसे नगरीय सभ्यता भी कहते हैं यहां पर मूर्तिपूजा, देवी / देवता के पूजन, चित्रांकन या मूर्ति का कोई प्रमाण नहीं मिलो है।

यहां पर समाधि प्रथा का प्रचलन था। यह समाधि तीन प्रकार की मिलती है अर्थात तीन प्रकार सेमृतक का अंतिम संस्कार किया जाता था

- अंडाकार गड्ढा खोद कर व्यक्ति को दफनाना । इस गड्ढे में व्यक्ति का सिर उत्तर की ओर पैर दक्षिण की ओर होते थे
- अंडाकार गड्ढा खोदकर व्यक्ति को तोड़मरोड़ कर इकट्ठा करके दफनाना
- एक खड्डा खोदकर व्यक्ति के साथ आभूषण को दफनाना

स्वास्तिक चिन्ह का प्रमाण इसी कालीबंगा सभ्यता से प्राप्त होता है इस स्वास्ति क चिन्ह का प्रयोग यहां के लोग वास्तुदोष को दूर करने के लिए किया जाता था।

कालीबंगा की सभ्यता और मेसोपोटामिया की सभ्यता की समानता के प्रमाण बेलनाकार बर्तन मिलते हैं।

यहां पर एक कपाल मिलता है जिस में छह प्रकार के छेद थे। जिससे अनुमान लगाया जाता है कि यहां के लोग शल्य चिकित्सा से परिचित थे अर्थात शल्य चिकित्सा के प्राचीनतम प्रमाण इसी सभ्यता से मिलते हैं।
यहां पर एक सिक्का प्राप्त होता है जिस के एक ओर स्त्री का चित्र हैत था दूसरी ओर चीता का चित्र बना हुआ है अर्थात अनुमान लगाया जा सकता है कि यहां पर परिवार की मातृसत्तात्मक प्रणाली का प्रचलन था।

कालीबंगा सभ्यता को सिधुसभ्यता की तीसरी राजधानी कहा जाता है।

कालीबंगा में सभ्यता में इस सभ्यता में पुरोहित का प्रमुख स्थान होता था।

- ये शब्द उनके स्वतंत्रता, प्रियता एवं धर्म पर दृढ रहने के सकते देते हैं। मेवाड़ में ।877 में महाराणा के कोर्ट का नाम बदलकर 'इजलास खास कर दिया गया था।
- हूणों के पराभव के बाद राजस्थान में जिन क्षत्रिय (राजपूत) वंशों ने अपने राज्य स्थापित किये उनमें गुहिल वंशीय राजपूत प्रमुख हैं।
- गौरीशंकर हीराचंद ओझा ने इन्हें विशुद्ध सूर्यवंशीय क्षत्रिय माना है। मेवाड़ राजवंश की स्थापना ईसा की पाँचवी शताब्दी में गुहिल नाम के एक प्रतापी राजा ने की थी।
- भारत की आजादी के समय यह विश्व का सबसे पुराना राजवंश था लगभग ।400 वर्ष की अवधि में 76 शासकों की श्रृंखला ने निर्विघ्न रूप से मेवाड़ पर शासन किया। इस वंश ने शौर्य और पराक्रम की दुनिया में अपना नाम स्वर्ण अक्षरों में लिखा है।

मेवाड़ रियासत के प्रमुख शासको का कालक्रम निम्न प्रकार से हैं :-

गुहिल वंश के शासक

गुहिल

राजा गुहिल का जीवन परिचय

विजयभूप ने अपनी राजधानी को अयोध्या से वल्लभीनगर में स्थानांतरित किया। यहां इनका शासन सदियों तक रहा। विजयभूप की 6वीं पीढ़ी में शिलादित्य नामक व्यक्ति वल्लभीनगर का शासक बना। राजस्थान के आबू में उस समय परमार वंश का शासन था जिनकी राजधानी चंद्रावती थी। परमारों की राजकुमारी पुष्पावती के साथ शिलादित्य का विवाह हो जाता है। पुष्पावती के छः पुत्रियाँ होती हैं लेकिन दोनों को एक पुत्र की चाह थी। अगली बार जब पुष्पावती गर्भवती होती है तो वह पुत्र प्राप्ति की मन्नत मांगने के लिए आबू के पास अंबुर्दा देवी मंदिर चली जाती है। पुष्पावती के आबू जाने के बाद पीछे से वल्लभीनगर पर पड़ोसी राज्य ने आक्रमण कर दिया। इस आक्रमण में राजा शिलादित्य व बाकी परिवार के लोग मारे जाते हैं। शिलादित्य के एक सेवक ने आबू पहुंचकर रानी पुष्पावती को इस बात की सूचना दी। पुष्पावती ने अपने पति शिलादित्य की मृत्यु के दुख में सती होने का फैसला किया लेकिन गर्भावस्था में होने के कारण उनकी सखियों ने ऐसा करने से उन्हें रोक दिया। स्थिति ऐसी हो गई थी कि अब वह अपने मायके भी नहीं जा सकती थीं अतः उन्होंने अन्यत्र जाने का फैसला किया। रानी पुष्पावती अपनी सखियों व सेवक के साथ जंगल के रास्ते होते हुए कुछ दिनों बाद आबू व वल्लभीनगर के मध्य स्थित वीरनगर नामक स्थान पर पहुंची। यहां वह कमलाबाई नामक एक विधवा व निसंतान ब्राह्मणी के घर रहने लगीं। कुछ माह बाद पुष्पावती ने एक बच्चे को जन्म दिया जिसे वह कमलाबाई को सौंपकर स्वयं सती हो गईं। ऐसा माना जाता है कि पुष्पावती ने बच्चे को गुफा में जन्म दिया था इसीलिए बच्चे का नाम गुहिल रखा दिया गया। बच्चे का पालन-पोषण ब्राह्मणी ने ही किया था।

बालक गुहिल बचपन से ही होनहार व साहसिक प्रवर्ती का था। भीलों के साथ उसके अच्छे संबंध थे। वह इन भील बालकों के साथ ही खेलता हुआ बड़ा हो गया। बड़ा होने पर उसे ब्राह्मणी द्वारा अपने वंश व अपने मां-बाप के बारे में पता चला। गुहिल इसका प्रतिशोध लेने के उद्देश्य से वल्लभीनगर पहंचा लेकिन वहां उस समय तक उसके शत्रु का राज्य नष्ट हो चुका था। अतः गुहिल वल्लभीनगर से पुनः वीरनगर लौट आया। वीरनगर आने के बाद गुहिल ने मेवाड़ पर (ईडर के आसपास का क्षेत्र) आक्रमण करने का निश्चय किया। उस समय मेवाड़ पर मेद जाति का शासन था। गुहिल ने भीलों से प्रार्थना की कि वो मेवाड़ को जीतने में उसकी मदद करें। गुहिल ने उनसे वादा किया कि इस सहयोग के बदले में वह और उसके वंशज कभी भी भीलों से कर नहीं लेंगे और ना ही कभी भीलों पर अत्याचार करेंगे। 566 ई. में गुहिल ने भीलों की मदद से मेदों को पराजित कर मेवाड़ पर अधिकार कर लिया।

- गुहिल या गुहादित्य - गुहिल वंश का संस्थापक था।
- भगवान राम के पुत्र कुश का वंशज माना जाने वाला गुहिल आनन्दपुर (गुजरात) का निवासी था।
- गुहिल ने 565ई. में नागदा (उदयपुर) को अपनी राजधानी बनाकर स्वतंत्र राज्य की स्थापना की।
- इनके पिता का नाम शिलादित्य एवं माता का नाम पुष्पवती था।

बप्पारावल (734 ई.)

बप्पा रावल (713-810) मेवाड़ राज्य में गुहिल राजपूत राजवंश के संस्थापक राजा थे। बप्पारावल का जन्म मेवाड़ के महाराजा गुहिल की मृत्यु के 19 वर्ष पश्चात 712 ई. में ईडर में हुआ। उनके पिता ईडर के शासक महेंद्र द्वितीय थे। बप्पा रावल गुहिल राजपूत राजवंश के वास्तविक संस्थापक थे (संस्थापक-गुहिलादित्य)। इसी राजवंश को सिसोदिया भी कहा जाता है, जिनमें आगे चल कर महान राजा राणा कुम्भा, राणा सांगा, महाराणा प्रताप हुए। बप्पा रावल, बप्पा या बापा वास्तव में व्यक्तिवाचक शब्द नहीं है, अपितु जिस

तरह "बापू" शब्द महात्मा गांधी के लिए रूढ़ हो चुका है, उसी तरह आदरसूचक "बापा" शब्द भी मेवाड़ के एक नृपविशेष के लिए प्रयुक्त होता रहा है।

सिसौदिया वंशी राजा कालभोज का ही दूसरा नाम बापा मानने में कुछ ऐतिहासिक असंगति नहीं होती। इसके प्रजासंरक्षण, देशरक्षण आदि कामों से प्रभावित होकर ही संभवत: जनता ने इसे बापा पदवी से विभूषित किया था। महाराणा कुंभा के समय में रचित एकलिंग महात्म्य में किसी प्राचीन ग्रंथ या प्रशस्ति के आधार पर बापा का समय संवत् 810 (सन् 753) ई. दिया है। दूसरे एकलिंग माहात्म्य से सिद्ध है कि यह बापा के राज्यत्याग का समय था। बप्पा रावल जब मात्र 3 वर्ष के थे तब यह और इनकी माता असहाय महसूस कर रहे थे, तब भील समुदाय ने दोनों की मदद कर सुरक्षित रखा, बप्पा रावल का बचपन भील जनजाति के बीच रहकर बिता, भील समुदाय ने अरबों के खिलाफ युद्ध में बप्पा रावल का सहयोग किया। यदि बापा का राज्यकाल 30 साल का रखा जाए तो वह सन् 723 के लगभग गद्दी पर बैठा होगा। उससे पहले भी उसके वंश के कुछ प्रतापी राजा मेवाड़ में हो चुके थे, किंतु बापा का व्यक्तित्व उन सबसे बढ़कर था। चित्तौड़ का मजबूत दुर्ग उस समय तक मोरी वंश के राजाओं के हाथ में था।

परंपरा से यह प्रसिद्ध है कि हारीत ऋषि की कृपा से बापा ने मानमोरी को मारकर इस दुर्ग को हस्तगत किया। टॉड को यही राजा मानका वि. सं. 770 (सन् 713 ई.) का एक शिलालेख मिला था जो सिद्ध करता है कि बापा और मानमोरी के समय में विशेष अंतर नहीं है। चित्तौड़ पर अधिकार करना कोई आसान काम न था। अनुमान है कि बापा की विशेष प्रसिद्धि अरबों से सफल युद्ध करने के कारण हुई. सन् 712 ई. में मुहम्मद कासिम से सिंधु को जीता। उसके बाद अरबों ने चारों ओर धावे करने शुरु किए। उन्होंने चावड़ों, मौर्यों, सैंधवों, कच्छेल्लों को हराया। मारवाड़, मालवा, मेवाड़, गुजरात आदि सब भूभागों में उनकी सेनाएँ छा गईं। इस भयंकर कालाग्नि से बचाने के लिए ईश्वर ने राजस्थान को कुछ महान व्यक्ति दिए जिनमें विशेष रूप से गुर्जर प्रतिहार सम्राट नागभट्ट प्रथम और बापा रावल के नाम उल्लेखनीय हैं। नागभट्ट प्रथम ने अरबों को पश्चिमी राजस्थान और मालवे से मार भगाया। बापा ने यही कार्य मेवाड़ और उसके आसपास के प्रदेश के लिए किया। मौर्य (मोरी) शायद इसी अरब आक्रमण से जर्जर हो गए हों। बापा ने वह कार्य किया जो मोरी करने में असमर्थ थे और साथ ही चित्तौड़ पर भी अधिकार कर लिया। बापा रावल के मुस्लिम देशों पर विजय की अनेक दंतकथाएँ अरबों की पराजय की इस सच्ची घटना से उत्पन्न हुई होंगी।

बप्पा रावल ने अपने विशेष सिक्के जारी किए थे। इस सिक्के में सामने की ओर ऊपर के हिस्से में माला के नीचे श्री बोप्प लेख है। बाईं ओर त्रिशूल है और उसकी दाहिनी तरफ वेदी पर शिवलिंग बना है। इसके दाहिनी ओर नंदी शिवलिंग की ओर मुख किए बैठा है। शिवलिंग और नंदी के नीचे दंडवत करते हुए एक पुरुष की आकृति है। पीछे की तरफ सूर्य और छत्र के चिह्न हैं। इन सबके नीचे दाहिनी ओर मुख किए एक गौ खड़ी है और उसी के पास दूध पीता हुआ बछड़ा है। ये सब चिह्न बप्पा रावल की शिवभक्ति और उसके जीवन की कुछ घटनाओं से संबद्ध हैं। परिचय बप्पा रावल को "कालभोज" के नाम से भी जाना जाता है।

जन्म - 713-14 ई. इनके समय चित्तौड़ पर मौर्य शासक मान मोरी का राज था 734 ई. में बप्पा रावल ने 20 वर्ष की आयु में मान मोरी को पराजित कर चित्तौड़ दुर्ग पर अधिकार किया वैसे तो गुहिलादित्य/गुहिल को गुहिल वंश का संस्थापक कहते हैं, पर गुहिल वंश का वास्तविक संस्थापक बप्पा रावल को माना जाता है बप्पा रावल को हारीत ऋषि के द्वारा महादेव जी के दर्शन होने की बात मशहूर है एकलिंग जी का मन्दिर - उदयपुर के उत्तर में कैलाशपुरी में स्थित इस मन्दिर का निर्माण 734 ई. में बप्पा रावल ने करवाया। इसके निकट हारीत ऋषि का आश्रम है।

आदि वराह मन्दिर - यह मन्दिर बप्पा रावल ने एकलिंग जी के मन्दिर के पीछे बनवाया 735 ई. में हज्जात ने राजपूताने पर अपनी फौज भेजी। बप्पा रावल ने हज्जात की फौज को हज्जात के मुल्क तक खदेड़ दिया। बप्पा रावल की तकरीबन 100 पत्नियाँ थीं, जिनमें से 35 मुस्लिम शासकों की बेटियाँ थीं, जिन्हें इन शासकों ने बप्पा रावल के भय से उन्हें ब्याह दी। 738 ई. - अरब आक्रमणकारियों से युद्ध हुआ ये युद्ध वर्तमान राजस्थान की सीमा के भीतर हुआ बप्पा रावल, प्रतिहार शासक नागभट्ट प्रथम व चालुक्य शासक विक्रमादित्य द्वितीय की सम्मिलित सेना ने अल हकम बिन अलावा, तामीम बिन जैद अल उतबी व जुनैद बिन अब्दुलरहमान अल मुरी की सम्मिलित सेना को पराजित किया बप्पा रावल ने सिंधु के मुहम्मद बिन कासिम को पराजित किया बप्पा रावल ने गज़नी के शासक सलीम को पराजित किया बप्पा रावल बप्पा या बापा वास्तव में व्यक्तिवाचक शब्द नहीं है, अपितु जिस तरह "बापू" शब्द महात्मा गांधी के लिए रूढ़ हो चुका है, उसी तरह आदरसूचक "बापा" शब्द भी मेवाड़ के एक नृपविशेष के लिए प्रयुक्त होता रहा है। सिसौदिया वंशी राजा कालभोज का ही दूसरा

माता - महाराणी जयवंता कँवर

विवाह - उन्होंने ।। शादियाँ की थी - महारानी अजब्धे पंवार, अमरबाई राठौर, शहमति बाई हाडा, लखाबाई, जसोबाई चौहान और 6 पत्निया

संतान - अमर सिह, भगवान दास और ।7 पुत्र

प्रारम्भिक जीवन और बचपन

प्रताप का जन्म भारतीय तिथि के अनुसार ज्येष्ठ शुक्ल की तृतीय को हुआ था ,इस कारण आज भी प्रतिवर्ष इस दिन महाराणा प्रताप का जन्म दिवस मनाया जाता हैं।

राणा उदय सिह द्वितीय के 33 पुत्र थे, जिनमें प्रताप सिह सबसे बड़े पुत्र थे, प्रताप बचपन से ही स्वाभिमानी और देशभक्त थे, साथ ही वो बहादुर और संवेदनशील भी थे। उन्हें खेलों और हथियार के प्रशिक्षण में रूचि थी। वास्तव में प्रताप को मेवाड़ के प्रति अपनी जिम्मेदारी की समझ बहुत जल्द आ गयी थी, इस कारण बहुत कम उम्र में ही उन्होंने हथियार, घुड़सवारी, युद्ध का प्रशिक्षण लेना शुरू कर दिया। वो सभी राजकुमारों में सबसे ज्यादा प्रतिभावान और बलशाली राजकुमार थे। महाराणा प्रताप जयमल मेडतिया के शिष्य थे, जो बहुत वीर था, जब बहलोल खान जयमल को युद्ध के ललकारा तो उन्होंने खान के घोड़े के साथ उसके दो टुकड़े कर दिए।

।567 में चित्तोड़ को अकबर की मुगल सेना ने चित्तोड़ को सब तरफ से घेर लिया था, ऐसे में मुगलों में हाथों में पड़ने की जगह महाराणा उदय सिह ने अपने परिवार के साथ गोगुंदा जाने का निश्चय किया, हालांकि उस समय भी राजकुमार प्रताप वही रहकर युद्ध करना चाहते थे लेकिन प्रतिकूल परिस्थितियां होने के कारण उन्हें अपने परिवार के साथ गोगुंदा जाना पड़ा। उदय सिह और उनके मंत्रियों ने गोगुंदा में ही अस्थायी शासन शुरू किया।

कुंवर प्रताप से महाराणा प्रताप

उदय सिह ने मरने से पहले अपनी सबसे छोटी रानी के पुत्र जगमल को राजा नियुक्त किया और प्रताप ने सबसे बड़ा और योग्य पुत्र होते हुए भी ये स्वीकार कर लिया, लेकिन मंत्री इस बात से सहमत नहीं हुए क्योंकि जगमल में राजा बनने के गुण नहीं थे। ।572 में उदय सिह की मृत्यु हो गयी। इसलिए सबने मिलकर ये निर्णय दिया कि सत्ता महाराणा प्रताप को दी जायेगी, महाराणा प्रताप सिह ने भी उनकी इच्छा का सम्मान करते हुए गद्दी सम्भाल ली, इस कारण जगमल को क्रोध आ गया और वो अकबर की सेना में शामिल होने के लिए अजमेर के लिए रवाना हो गया और अकबर की मदद के बदले जहाजपुर की जागीर हासिल करना ही उसकी मंशा थी।

महाराणा प्रताप और अकबर

महाराणा प्रताप के समय अकबर दिल्ली का शासक था, उसकी रणनीति थी कि वो हिन्दू राजाओं की शक्ति को अपने अधीन करके उन पर शासन करता था। इसी क्रम में युद्ध को नजरअंदाज करते हुए बहुत से राजपूतों ने युद्ध की जगह अपनी बेटियों के डोले अकबर के हरम में भेज दिएँ जिससे कि संधि हो सके, लेकिन मेवाड़ ऐसा राज्य नहीं था, यहाँ अकबर को काफी संघर्ष करना पड़ा। उदयसिह के समय राजपूतों ने जब चित्तोड़ छोड़ दिया था तो मुगलों ने शहर पर कब्जा कर लिया हालांकि वो पूरे मेवाड़ को हासिल करने में नाकाम रहे और अकबर पूरे हिन्दुस्तान पर शासन करना चाहता था इसलिए पूरा मेवाड़ उसका लक्ष्य था। केवल ।573 में ही अकबर ने 6 बार द्विअर्थी प्रस्ताव भेजे लेकिन प्रताप ने सबको अस्वीकार कर दिया, अकबर के पांच बार संधि वार्ता भेजने के बाद प्रताप ने अपने बेटे अमर सिह को अकबर के दरबार में संधि अस्वीकार करने के लिए भेजा, इसके बाद सबसे अंतिम प्रस्ताव अकबर के बहनोई मान सिह लेकर आये थे और अंतिम बार भी संधि प्रस्ताव के नही मानने से अकबर बेहद क्रोधित हुआ और उसने मेवाड़ पर हमला कर दिया।

वैसे कहा जाता हैं कि अकबर ने राणा प्रताप से ये तक कहा था कि वो यदि अकबर से संधि कर ले तो अकबर प्रताप को आधा हिंदुस्तान दे देगा लेकिन महाराणा प्रताप ने किसी की भी अधीनता स्वीकार करने से मना कर दिया

हल्दीघाटी का युद्ध

।576 में अकबर ने राजपूत सेनापति मानसिह प्रथम और असफ खान को प्रताप पर आक्रमण करने के लिए भेजा, जबकि प्रताप ने ग्वालियर के राम शाह तंवर और उनके तीन पुत्र, रावत कृष्णादासजी चुडावत, मानसिह झाला और चन्द्र सेनजी राठौड़ और अफगान से हाकिम खान सुर के अलावा भील समुदाय के मुखिया राव पुंजा की मदद से एक छोटी सी सेना गठित की। मुगल सेना में जहाँ 80,000 सैनिक थे वहीं राजपूत सेना मात्र 20,000 सैनिकों की थी। इस तरह उदयपुर से 40 किलोमीटर दूर हल्दीघाटी में युद्ध सम्मुख युद्ध शुरू हुआ। यह युद्ध ।8 जून ।576 को 4 घंटे के लिए हुआ, मुगल सेना को प्रताप के भाई शक्ति सिह ने गुप्त मार्ग बता दिया,जिससे ,मुगलों का आक्रमण की दिशा मिल गयी। मुगल सेना के घुड़सवारों का नेतृत्व मानसिह प्रथम कर रहे थे,

भारत के वृहद राजस्थान संघ के भूपाल सिंह प्रमुख बनाये गये। महाराणा भोपाल सिंह जी ने भोपलसागर बसाया और वहा एक विशाल तालाब का निर्माण भी करवाया।

महाराणा भगवत सिंह (1955 – 1984 ई०)

महाराणा महेन्द्र सिंह (1984 ई०)

इस तरह 556 ई० में जिस गुहिल वंश की स्थापना हुई बाद में वही सिसोदिया वंश के नाम से जाना गया। जिसमें कई प्रतापी राजा हुए, जिन्होने इस वंश की मानमर्यादा, इज्जत और सम्मान को न केवल बढ़ाया बल्कि इतिहास के गौरवशाली अध्याय में अपना नाम जोडा। आज राजस्थान का इतिहास इन्ही वीरो की शहादत का पर्याय बन गया है।

अध्याय–5

मारवाड़ का इतिहास

- **राठौड़ वंश**

राजस्थान के उत्तरी पश्चिम भाग में जिस राजपूत वंश का शासन हुआ उसे राठौड़ वंश कहा गया है। उसे मारवाड के नाम से जाना जाता है। मारवाड़ में पहले गुर्जर प्रतिहार वंश का राजा था। प्रतिहार यहां से कन्नौज (उत्तरप्रदेश) चले गये। फिर राठौड़ वंश कि स्थापना इस भाग में हुई तथा मारवाड़ कि संकटकालीन राजधानी 'शिवाना दुर्ग' को कहा जाता था।

शाखा	स्थापना	संस्थापक
1. मारवाड़ (जोधपुर)	1240 ई.	राव सीहा
2. बीकानेर	1465 ई.	राव बीका
3- किशनगढ़	1609 ई.-	किशनसिंह

हम इस अध्याय में मारवाड़ के राठौड़ वंश का विस्तृत अध्ययन करेंगे।

उत्पत्ति

राठौड शब्द की व्युत्पत्ति श्राष्ट्रकूटश् शब्द से मानी जाती है।

पृथ्वीराजरासो, नैणसी, दयालदास और कर्नल टॉड राठौड़ों को कन्नौज के जयचन्द गहड़वाल का वंशज मानते हैं। ।

'राष्ट्रोढ वंश महाकाव्य में राठौड़ों की उत्पत्ति शिव के शीश पर स्थित चन्द्रमा से बताई है।

डा. हार्नली ने सर्वप्रथम राठौड़ों को गहड़वालों से भिन्न माना है। इस मत का समर्थन डा. ओझा ने किया है।

डा. ओझा ने मारवाड़ के राठौड़ों को बदायूँ के राठौड़ों का वंशज माना हैं।

मारवाड़ (जोधपुर) के राठौड़ संस्थापक – राव सीहा (1240 – 1273)

मारवाड़ के राठौड़ वंश के संस्थापक, तथा मारवाड के राठौड़ों का संस्थापक या आदि पुरुष भी कहा जाता हैं।

राव सीहां कुंवर 'सेतराम' का पुत्र था उसकी रानी सोलंकी वंश की 'पार्वति थी।

13 वीं शताब्दी में जब तुर्कों ने कन्नौज को आक्रमण कर बरबाद कर दिया तो राव सी हा मारवाड़ चला आया।

राव सीहा ने सर्वप्रथम पाली (वर्तमान) के निकट अपना साम्राज्य स्थापित किया ऐसा कहते हैं कि उन्होंने पाली के पालीवाल ब्राह्मणों को मेर व मीणाओं के अत्याचार से मुक्ति दिलाई उनकी रक्षा की तथा उसके पश्चात् उनके आग्रह पर वहीं आकर बस गया।

पाली के समीप बीठू गाँव के देवल के लेख से सीहा की मृत्यु की तिथि 1273 ई. निश्चित होती हैं।इस लेख के अनुसार सीहा सेतकुँवर का पुत्र था। उसकी पत्नी पार्वती ने उसकी मृत्यु पर इस देवल का निर्माण करवाया था।इस लेख के अनुसार सीहा की मृत्यु बीठू गांव (पाली) में मुसलमानों से गायों कि रक्षा करते हुए युद्ध के दौरान हुई थी। इस लेख पर अश्वारोही सीहा को शत्रु पर भाला मारते हुए दिखाया गया हैं। इस लेख से प्रमाणित होता हैं कि इस समय राठौड़ों का राज्य विस्तार पाली के आसपास ही सीमित था।

राव सिहा के पश्चात् उनका पुत्र आसथान गद्दी पर बैठा।

आस्थान (1273 – 1291)

सीहा के बाद आसथान राठौड़ों का शासक बना। उसने गुँढोज को केन्द्र बनाया। 1291 ई. में सुल्तान जलालुद्दीन खिलजी के आक्रमण के समय पाली की रक्षा करते हुए आसथान वीरगति को प्राप्त हुआ

आसथान के पुत्र धूहड़ ने राठौड़ों की कुलदेवी चक्रेश्वरी ; नागणेची द्ध की मूर्ति कर्नाटक से लाकर नगाणा गांव (बाड़मेर) मे स्थापित कराई।

इनके छोटे भाई का नाम धांधलश् था। ये लोकदेवता पाबू जी के पिता थे।

राव चुंडा (1383 – 1423)

राव चूडा विरमदेव का पुत्र था।

राव चूँडा राठौड़ों का प्रथम महत्वपूर्ण शासक माना जाता हैं। अपने पिता की मृत्यु के समय चूँडा छः वर्ष का था। इसलिए उसकी माता ने उसे चाचा मल्लिनाथ के पास भेज दिया। मल्लिनाथ ने चूँडा को सालोड़ी गाँव जागीर में दिया था ।

उसने इन्दा शाखा के राजा की पुत्री किशोर कुंवरी (मण्डोर ए जोधपुर) से विवाह किया तथा दहेज मे उसे मण्डोर दुर्ग मिला ।

चूँडा ने इन्दा परिहारों के साथ मिलकर मण्डोर को मोलवा के सूबेदार से छीन लिया तथा मण्डोर को अपनी राजधानी बनाया।

इस प्रकार इन्दा परिहारों को अपना सहयोगी बनाकर राव चूडा ने मारवाड़ में सामन्त प्रथा की स्थापना की।

उसने जलाल खां खोखर को पराजित कर नागौर पर अधिकार कर लिया था ।

परन्तु जैसलमेर के भाटियों और जांगलप्रदेश के साखलाओं के नागौर पर आक्रमण के समय 1423 ई. में चूँडा मारा गया।

राव चूँडा ने नागौर के पास चूण्डासर कस्बा बसाया।

उसकी रानी चाँद कँवर ने जोधपुर की चाँदबावड़ी का निर्माण करवाया था।

रावल मल्लिनाथ

राजस्थान के प्रसिद लोकदेवता ट्ट इन्होंने अपनी राजधानी 'मेवानगर' (नाकोड़ा) बनायी। ट्ट मल्लीनाथ के नाम पर ही मारवाड़ क्षेत्र को मालाणी कहते हैं।

भाई ट्ट 'वीरम' (मल्लीनाथ ने अपने बेटे जगमाल को राजा न बनाकर वीरम को राजा बना दिया।)

कान्हा (1423 – 1427)

चूँडा ने अपनी मोहिलाणी रानी के प्रभाव में आकर उसके पुत्र कान्हा को अपना उत्तराधिकारी बनाया जबकि रणमल, चूँडा का ज्येष्ठ पुत्र था।

अध्याय -6

राजस्थान के परमार वंश

परमार का शाब्दिक अर्थ शत्रु को मारने वाला होता है। प्रारम्भ में परमारों का शासन आबू के आस-पास के क्षेत्रों तक ही सीमित था। प्रतिहारों की शक्ति के ह्रास के उपरान्त परमारों की राजनीतिक शक्ति में वृद्धि हुई।

राजस्थान के परमार वंश

आबू के परमार :- आबू के परमार वंश का संस्थापक 'धूमराज' था, लेकिन इनकी वंशावली उत्पलराज से प्रारम्भ होती है। पड़ोसी होने के कारण आबू के परमारों का गुजरात के शासकों से सतत् संघर्ष चलता रहा। गुजरात के शासक मूलराज सोलंकी से पराजित होने के कारण आबू के शासक धरणीवराह को राष्ट्रकूट धवल की शरणागत होना पड़ा। लेकिन कुछ समय बाद धरणीवराह ने आबू पर पुनः अधिकार कर लिया। उसके बाद महिपाल का 1002 ई. में आबू पर अधिकार प्रमाणित होता है। इस समय तक परमारों ने गुजरात के सोलंकियों की अधीनता स्वीकार कर ली। महिपाल के पुत्र धंधुक ने सोलंकियों की अधीनता से मुक्त होने का प्रयास किया। फलतः आबू पर सोलंकी शासक भीमदेव ने आक्रमण किया। धंधुक आबू छोड़कर धार के शासक भोज के पास चला गया। भीमदेव ने विमलशाह को आबू का प्रशासक नियुक्त किया। विमलशाह ने भीमदेव व धंधुक के मध्य पुनः मेल करवा दिया। उसने 1031 ई. में आबू में 'आदिनाथ' के भव्य मंदिर का भी निर्माण करवाया। धंधुक की विधवा पुत्री ने बसन्तगढ़ में सूर्यमंदिर का निर्माण करवाया व सरस्वती बावड़ी का जीर्णोद्धार करवाया।

कृष्णदेव के शासनकाल :- कृष्णदेव के शासनकाल में 1060 ई. में परमारों और सोलंकियों के सम्बन्ध पुनः बिगड़ गए, लेकिन नाडौल के चौहान शासक बालाप्रसाद ने इनमें पुनः मित्रता करवाई। कृष्णदेव के पौत्र विक्रमदेव ने महामण्डलेश्वर की उपाधि धारण की। विक्रमदेव का प्रपौत्र धारावर्ष (1163-1219 ई.) आबू के परमारों का शक्तिशाली शासक था। इसने मोहम्मद गौरी के विरुद्ध युद्ध में गुजरात की सेना का सेनापतित्व किया। वह गुजरात के चार सोलंकी शासकों कुमारपाल, अजयपाल, मूलराज व भीमदेव द्वितीय का समकालीन था। उसने सोलंकियों की अधीनता का जुआ उतार फेंका। उसने नाडौल के चौहानों से भी अच्छे सम्बन्ध रखे। अचलेश्वर के मन्दाकिनी कुण्ड पर बनी हुई धारावर्ष की मूर्ति और आर-पार छिद्रित तीन भैंसे उसके पराक्रम की कहानी कहते हैं। 'कीर्ति कौमुदी' नामक ग्रंथ का रचयिता सोमेश्वर धारावर्ष का कवि था। उसके पुत्र सोमसिंह के शासनकाल में तेजपाल ने आबू के देलवाड़ा गाँव में 'लूणवसही' नामक नेमिनाथ का मंदिर अपने पुत्र लूणवसही व पत्नी अनुपमादेवी के श्रेयार्थ बनवाया। इसके पश्चात् प्रतापसिंह और विक्रम सिंह आबू के शासक बने। 1311 ई. के लगभग नाडौल के चौहान शासक राव लुम्बा ने परमारों की राजधानी चन्द्रावती पर अधिकार कर लिया और वहाँ चौहान प्रभुत्व की स्थापना कर दी।

मालवा के परमार :- मालवा के परमारों का मूल उत्पत्ति स्थान भी आबू था। इनकी राजधानी उज्जैन या धारानगरी रही, मगर राजस्थान के कई भू-भाग-कोटा राज्य का दक्षिणी भाग, झालावाड़, वागड़, प्रतापगढ़ का पूर्वी भाग आदि इनके अधिकार में थे। मालवा के परमारों का शक्तिशाली शासक मुंज हुआ, वाक्पतिराज, अमोघ-वर्ष उत्पलराज, पृथ्वीवल्लभ, श्रीवल्लभ आदि उसके विरुद थे। मेवाड़ के शासक शक्तिकुमार के शासनकाल में उसने आहड़ को नष्ट किया और चित्तौड़ पर अधिकार कर लिया। उसने चालुक्य शासक तैलप द्वितीय को छः बार परास्त किया, मगर सातवीं बार उससे पराजित हुआ और मारा गया। राजा मुंज को 'कवि वृष' भी कहा जाता था। 'नवसहसांक चरित' का रचयिता पद्मगुप्त और 'अभिधानमाला' का रचयिता हलायुध उसके दरबार की शोभा बढ़ाते थे।

मुंज के बाद सिन्धुराज और भोज प्रसिद्ध परमार शासक हुए। भोज अपनी विजयों और विद्यानुराग के लिए प्रसिद्ध था। भोज ने सरस्वती कण्ठाभरण, राजमृगांक, विद्वज्जनमण्डल, समरांगण, शृंगार मंजरी कथा, कूर्मशतक आदि ग्रंथ लिखे। चित्तौड़ में उसने 'त्रिभुवन नारायण' का प्रसिद्ध शिव मंदिर बनवाया, जो मोकल मंदिर के नाम से भी जाना जाता है, (1429 ई. में राणा मोकल द्वारा जीर्णोद्धार के कारण)। कुम्भलगढ़ प्रशस्ति के अनुसार नागदा में भोजसर का निर्माण भी परमार भोज द्वारा करवाया गया। उसने सरस्वती कण्ठाभरण नामक पाठशाला बनवाई। वल्लभ, मेरुतुंग, वररुचि, सुबन्धु, अमर, राजशेखर, माघ, धनपाल, मानतुंग आदि विद्वान उसके दरबार में थे।

भोज का उत्तराधिकारी जयसिंह भी एक योग्य शासक था। वागड़ का राजा मण्डलीक उसका सामन्त था। 1135 ई. के लगभग मालवा पर चालुक्य शासक सिद्धराज ने अधिकार कर लिया और परमारों की शक्ति ह्रासोन्मुख हो गई। तेरहवीं शताब्दी में अर्जुन वर्मा के समय मालवा पर पुनः परमारों का आधिपत्य स्थापित हुआ। मगर यह अल्पकालीन रहा। खिलजियों के आक्रमण ने

अध्याय – 7

मुगल सम्राटों और उनकी राजपूत नीति

इस लेख में हम विभिन्न मुगल सम्राटों और उनकी राजपूत नीतियों के बारे में चर्चा करेंगे।

बाबरः

बाबर की राजपूतों के प्रति कोई सुनियोजित नीति नहीं थी। उसे मेवाड़ के राणा सांगा और चंदेरी के मेदिनी राय के खिलाफ लड़ना पड़ा क्योंकि भारत में अपने साम्राज्य की स्थापना और सुरक्षा के लिए यह आवश्यक था। दोनों अवसरों पर, उन्होंने अपनी सफलता के बाद जिहाद की घोषणा की और राजपूतों के सिर की मीनारों को उठाया। लेकिन उन्होंने एक राजपूत राजकुमारी के साथ हुमायूँ से शादी की और राजपूतों को सेना में नियुक्त किया। इस प्रकार, उन्होंने न तो राजपूतों से दोस्ती करने की कोशिश की और न ही उन्हें अपना स्थायी दुश्मन माना।

हुमायूं:

हुमायूँ ने राजपूतों के बारे में अपने पिता की नीति को जारी रखा। हालाँकि, उसने मेवाड़ के राजपूतों से दोस्ती करने का एक अच्छा अवसर खो दिया। उन्होंने मेवाड़ को गुजरात के बहादुर शाह के खिलाफ भी मदद नहीं की, जब मेवाड़ की रानी कर्णावती ने उनकी बहन बनने की पेशकश की थी। वह शेरशाह के खिलाफ मारवाड़ के मालदेव का समर्थन पाने में भी असफल रहा।

शेर शाहः

शेरशाह अपनी राजसत्ता के अधीन राजपूत शासकों को लाना चाहता था। 1544 ई। में, उसने मारवाड़ पर हमला किया और उसके बड़े हिस्से पर कब्जा करने में सफल रहा। रणथंभौर पर भी उसका कब्जा हो गया, जबकि मेवाड़ और जयपुर के शासकों ने बिना लड़े उसकी आत्महत्या स्वीकार कर ली।

उसने अपनी मृत्यु से ठीक पहले कालिंजर पर भी कब्जा कर लिया। इस प्रकार, वह अपने उद्देश्य में सफल रहा। उनकी सफलता का एक प्राथमिक कारण यह था कि उन्होंने राजपूत शासकों के राज्य को गिराने की कोशिश नहीं की। जिन्होंने उसकी आत्महत्या स्वीकार की, वे अपने राज्यों के स्वामी रह गए।

अकबरः

- अकबर पहला मुगल सम्राट था जिसने राजपूतों के प्रति एक सुनियोजित नीति अपनाई। उनकी राजपूत नीति के निर्माण में विभिन्न कारकों ने भाग लिया। अकबर एक साम्राज्यवादी था। वह अपने शासन को यथासंभव भारत के क्षेत्र में लाना चाहता था।
- इसलिए, राजपूत शासकों को उसकी अधीनता में लाना आवश्यक था। अकबर राजपूतों की शिष्टता, आस्था, मर्यादा, युद्ध कौशल आदि से प्रभावित था। उसने उन्हें अपने दुश्मन के रूप में बदलने के बजाय उनसे दोस्ती करना पसंद किया।
- वह विदेशियों पर निर्भर रहने के बजाय भारतीय लोगों के बीच से भरोसेमंद सहयोगी चाहते थे। अफगानों और उनके रिश्तेदारों के विद्रोह, मिर्जों ने अपने शासन के शुरुआती दौर में, उन्हें इस आवश्यकता के बारे में आश्वस्त किया। इसलिए, राजपूत उनकी अच्छी पसंद बन गए। अकबर की उदार धार्मिक नीति ने भी उनसे मित्रता करने का निर्देश दिया।
- अकबर ने राजपूतों से दोस्ती करने की कोशिश की, लेकिन साथ ही उन्हें अपनी अधीनता में लाने की इच्छा भी की।
- हम राजपूत शासकों के बारे में निम्नलिखित तीन सिद्धांत पाते हैं:

(क) उसने राजपूतों के मजबूत किलों पर कब्जा कर लिया जैसे कि चित्तौड़, मेड़ता, रणथंभौर, कालिंजर आदि के किले। इसने राजपूतों की शक्ति को कमजोर कर दिया ताकि वे प्रतिरोध की पेशकश कर सकें।

(ख) उन राजपूत शासकों ने या तो अपनी संप्रभुता स्वीकार कर ली या उनके साथ वैवाहिक संबंधों में प्रवेश किया जो स्वेच्छा से अपने राज्यों के स्वामी थे। उन्हें राज्य में उच्च पद दिए गए थे और उनके प्रशासन में कोई हस्तक्षेप नहीं था। हालाँकि, उन्हें सम्राट को वार्षिक श्रद्धांजलि देने के लिए कहा गया था।

(c) जिन राजपूत शासकों ने उनका विरोध किया, उन पर हमला किया गया और उनकी संप्रभुता को स्वीकार करने के लिए मजबूर करने के प्रयास किए गए। मेवाड़ का मामला इसका सबसे अच्छा उदाहरण था।

- 1562 ई। में मेड़ता के किले पर कब्जा कर लिया गया था, जो जयमल के अधीन था, जो मेवाड़ के शासक के सामंती प्रमुख थे। 1568 ई। में, चित्तौड़ को मेवाड़ से छीन लिया गया

मुनाफा होगा वह उपर्युक्त अनुपात में दोनों में विभाजित कर दिया जायेगा।

- दोनों राज्यों के अधिकारी और कर्मचारी, मालवा में मिल जुलकर काम करेंगे।
- यदि मराठों को रोकने के लिये और अधिक सैनिकों की आवश्यकता पड़ेगी तो दोनों राज्य उपर्युक्त अनुपात में सैनिकों तथा सवारों की व्यवस्था करेंगे।
- समझौता तो हो गया परंतु इसको कार्यान्वित किया जा सकता उसके पहले ही मराठा मालवा में आ धमके। गुजरात की तरफ से मल्हारराव होल्कर और राणोजी सिन्धिया ने मालवा में प्रवेश किया। आनंदराव पंवार और विठोजी बूले अपने सैनिक दस्तों के साथ पहले से ही मालवा में उपस्थित थे। ।। दिसंबर, ।732 ई. को होल्कर और सिन्धिया ने रामपुरा में नियुक्त सवाई जयसिंह के बख्शी जोरावरसिंह को लिखा कि वह रामपुरा का बकाया रुपया चुकाने की व्यवस्था करें।
- इस समय जयसिंह बुन्देलखंड की तरफ बढ़ रहा था। होल्कर और सिन्धिया को ज्यों ही जयसिंह की गतिविधियों की जानकारी मिली, वे तेजी के साथ उस तरफ बढ़े और मन्दसौर के निकट उन्होंने जयसिंह को चारों तरफ से घेर लिया।
- मराठों ने जयसिंह की सेना की इतनी जोरदार नाकेबंदी की कि रसद और पानी मिलना भी कठिन हो गया जिससे उसे भारी कष्ट उठाने पड़े। ऐसी स्थिति में, जयसिंह ने कूटनीति से काम लिया। इन दिनों कृष्णाजी पंवार और उदाजी पंवार का पेशवा बाजीराव से तनाव चल रहा था क्योंकि पेशवा ने मालवा में उन्हें जो हिस्सा प्रदान किया था, उससे वे दोनों ही असंतुष्ट थे।
- जयसिंह ने इन दोनों असंतुष्ट सरदारों से गुप्त बातचीत चलाई और सहायता की प्रार्थना की। फलस्वरूप इन दोनों सरदारों ने अपने सैनिक दस्तों को जयसिंह की सेना के साथ मिला देने का प्रयास किया। लेकिन होल्कर भी चौकन्ना था।
- उसने उदाजी के शिविर पर आक्रमण कर उशकी सैन्य सामग्री को लूट लिया और उसे जयसिंह से मिलने से रोक दिया। चूँकि जयसिंह को दिल्ली से शीघ्र सहायता की आशा न थी अतः उसने मराठों से संधि की बातचीत आरंभ कर दी। वह मराठों को 6 लाख रुपये बतौर संधि के देना चाहता था परंतु होल्कर अधिक की माँग करने लगा। दोनों पक्षों में लेनदेन की बातचीत बंद कर मराठों पर जोरदार आक्रमण किया और मराठों को पीछे धकेल दिया।
- इस संघर्ष में जयसिंह की सेना के पिछले भाग का सेनापति मारा गया। मराठों के ।0-।5 बड़े अधिकारी और ।50-200 सैनिक मारे गये और होल्कर लगभग 20-30 मील दूर तक पीछे हट गया। जयसिंह सेना सहित होल्कर के पीछे गया परंतु वह ।6 मील ही बढ़ पाया था कि अचानक होल्कर ने उसे चारों तरफ से घेर लिया। अब जयसिंह में अधिक लड़ने की शक्ति नहीं रही थी, अतः पुनः समझौता-वार्ता शुरू करनी पड़ी। इस बार उसको मराठों को 6 लाख रुपये नकद तथा मालवा के 58 परगनों की वसूली देना स्वीकार करना पड़ा।
- इसके बाद ।8 मार्च, ।733 ई. में मराठों ने मालवा को छोड़ दिया। इसके बाद जयसिंह भी अपनी राजधानी जयपुर लौट आया क्योंकि राजपूताना में उसकी उपस्थिति अधिक जरूरी हो गयी थी। अक्टूबर, ।733 में मेवाड़ की सेना भी मालवा से वापस बुला ली गयी। इसी समय एक मराठा सेना ने रामपुरा जाकर जयपुर के अधिकारियों से लगभग सात लाख रुपये वसूल किये। जयसिंह को मराठों के इस व्यवहार से काफी दुःख हुआ, परंतु वह विवश था

मराठों का राजस्थान में प्रवेश

- मराठों का राजपूताना पर पहला आक्रमण – पंचोली के युद्ध में परास्त बुद्धसिंह ने पहले उदयपुर में और फिर अपने ससुर बेगूं (मेवाड़) के ठाकुर देवीसिंह के यहाँ आश्रय लिया। यहाँ अत्यधिक मद्यपान के कारण वह पागल सा हो गया, परंतु भाग्यवश यहाँ उसे एक ऐसा साथी मिल गया जिसकी उसने कल्पना भी न की थी।
- सालिमसिंह के बड़े लड़के प्रतापसिंह ने जब अपने छोटे भाई दलेलसिंह को बून्दी का राजा बनते देखा तो उसके स्वाभिमान को गहरा धक्का लगा और उसने बुद्धसिंह का पक्ष लेने का निश्चय कर लिया। उधर मालवा पर मराठों का नियंत्रण कायम हो चुका था तथा फरवरी, ।733 में मंदसौर के निकट मराठों से परास्त होने के बाद जयसिंह को उनके साथ अपमानजनक संधि के लिये विवश होना पड़ा था। मराठों की बढ़ती हुई शक्ति को देखकर बुद्धसिंह की कछवाही रानी ने प्रतापसिंह को मराठों से सहायता प्राप्त करने के लिये दक्षिण भेजा।
- वस्तुतः कछवाही रानी अपने तथाकथित पुत्र भवानीसिंह को बून्दी के सिंहासन पर बैठाकर शासन सत्ता अपने हाथ में रखना चाहती थी। वैसे भवानीसिंह को उसने जन्म नहीं दिया था और न जाने कहाँ से उसे मँगवाया था और अपना पुत्र घोषित कर दिया था। बुद्धसिंह ने उसे अपना पुत्र मानने से इन्कार कर दिया था और बाद में जयसिंह के इशारे पर भवानीसिंह

को मरवा दिया गया। तभी से कछवाही रानी अपने सौतेले भाई से बुरी तरह से नाराज हो गयी थी। 1730 ई. में बुद्धसिंह की भी मृत्यु हो गयी। परंतु उसके लड़के उम्मेदसिंह को बूंदी-जयपुर संघर्ष विरासत में मिला। कछवाही रानी ने अब उम्मेदसिंह को पुनः बूंदी दिलवाने का बीड़ा उठाया और प्रतापसिंह को दक्षिण भेजा। प्रतापसिंह ने होल्कर और सिन्धिया को 6 लाख रुपया देने का आश्वासन दिया। अतः 18 अप्रैल, 1734 ई. को मल्हार राव होल्कर और राणोजी सिन्धिया के नेतृत्व में मराठा सेना ने बून्दी पर चढाई कर दी। चार दिन के संघर्ष के बाद 22 अप्रैल को बून्दी पर मराठों का अधिकार हो गया।

- इस संघर्ष में राजपूताना के भावी राजनीतिज्ञ जालिमसिंह हाड़ा को गहरी चोटें आई और मराठे उसे बंदी बनाकर अपने साथ ले गये। बून्दी में महाराव उम्मेदसिंह का शासन स्थापित हो गया। अपनी कृतज्ञता प्रकट करने के लिये कछवाही रानी ने होल्कर के राखी बाँधकर उसे अपना भाई बनाया। चूँकि उम्मेदसिंह अभी छोटा था अतः प्रतापसिंह को शासन कार्य सौंपा गया।
- मराठों के बून्दी से लौटते ही जयसिंह ने 20,000 सैनिकों को बून्दी पर आक्रमण करने के लिये भेजा। इस सेना ने बून्दी पर अधिकार कर दलेलसिंह को पुनः बून्दी का शासक बना दिया। प्रतापसिंह बून्दी से भागकर नेनगर नामक स्थान पर होल्कर से मिला, परंतु वह दुबारा हस्तक्षेप करने के लिये तैयार नहीं हुआ। वास्तव में पेशवा बाजीराव ने यह अनुभव कर लिया था कि जयसिंह बून्दी के मामलों में अपनी बात पर अड़ा हुआ है और कुछ लाख रुपयों के प्रलोभन के लिये उससे संबंध बिगाड़ना उचित नहीं होगा।
- इसीलिए 1735ई. के बाद मराठों ने जयसिंह के साथ अच्छे संबंध बनाये रखने का प्रयास किया, क्योंकि पेशवा मुगल सरकार के साथ समझौता करने में जयसिंह की सेवाओं का लाभ उठना चाहता था। यही कारण है कि उन्होंने जयसिंह के जीवनकाल में बून्दी के मामले में हस्तक्षेप नहीं किया।

हुरडा सम्मेलन

- हुरड़ा सम्मेलन - मालवा, गुजरात और बुन्देलखंड में मराठों को रोकने में मुगल सरकार की असफलता तथा राजस्थानी राज्य के आंतरिक झगड़ों में मराठों के इस प्रथम हस्तक्षेप ने राजस्थान के समस्त विचारशील शासकों की आँखें खोल दी। राजपूत शासकों ने अनुभव किया कि मराठों के बढते हुये प्रभाव को रोकने के लिये उन्हें सामूहिक प्रयास करने चाहिएँ अन्यथा राजस्थान की भी वही दशा हो जायेगी जो मालवा और गुजरात की हुयी है। वस्तुतः राजस्थान के सभी शासकों को मराठों से समान भय था। मेवाड़ के महाराणा संग्रामसिंह को इस बात का भय था कि मालवा पर मराठों का अधिकार हो जाने से, वे मेवाड़ के पड़ोस में होने के कारण यहाँ की शांति भंग कर सकते हैं। सवाई जयसिंह मराठों को मालवा से दूर रखकर मालवा का कुछ भाग रामपुरा में मिलाकर अपने छोटे पुत्र माधोसिंह के लिये अलग राज्य बनाना चाहता था, ताकि भावी उत्तराधिकार के संघर्ष को टाला जा सके। साथ ही वह अपनी मंदसौर पराजय का बदला भी लेना चाहता था। जोधपुर के महाराजा अभयसिंह को गुजरात की सूबेदारी के समय पिलाजी गायकवाड़ की हत्या के प्रश्न पर मारवाड़-मराठा संबंध कटु हो चुके थे। अभयसिंह गुजरात को मराठों से सुरक्षित कर, गुजरात के कुछ भाग को अपने राज्य में मिलाना चाहता था। चूँकि कोटा, अन्य राजपूत राज्यों की अपेक्षा शक्तिहीन था, अतः उसे मराठों का अत्यधिक खतरा था। मराठों को मालवा से निकालने के लिये मेवाड़ के स्वर्गीय महाराणा संग्रामसिंह ने शाहू के पास अपना प्रतिनिधि भेजकर बातचीत द्वारा समस्या को हल करने के कई प्रयत्न किये थे, किन्तु सभी प्रयत्न असफल रहे। तब मराठों को प्रलोभन देकर मालवा से निकालने की नीति अपनायी गयी। महाराणा के धायभाई नगराज ने मराठों को 5 लाख रुपया देकर मालवा खाली करना चाहा, किन्तु धन लेकर भी मराठे मालवा को छोड़ने को तैयार नहीं हुए। इस प्रकार राजस्थान के सीमावर्ती क्षेत्रों से मराठों को निकालने हेतु, राजपूतों की साम-दाम की नीति असफल हो चुकी थी। अतः अब मराठों के विरुद्ध राजस्थानी शासकों को अपनी संगठित शक्ति का सहारा लेने के अतिरिक्त कोई अन्य विकल्प नहीं था।
- मराठों का सफलतापूर्वक सामना कर सकने के आवश्यक उपाय सोच निकालने के लिये सवाई जयसिंह ने राजस्थान के सारे शासकों को हुरडा (उत्तरी मेवाड़ में अजमेर की सीमा के निकट) में एकत्रित करने का आयोजन किया। हुरडा सम्मेलन के कुछ दिन पूर्व मेवाड़ के एक प्रमुख उमराव ने मालवा के विभाजन की एक रूपरेखा तैयार की थी, जिसके अनुसार प्रान्त के दो भाग मेवाड़ को, एक-एक भाग जोधपुर व जयपुर को और आधा भाग बून्दी और कोटा को देने की बात कही गयी थी। मेवाड़ के महाराणा संग्रामसिंह ने मराठों के विरुद्ध, राजस्थान के अपने ही साधनों पर आधारित प्रत्याक्रमण की योजना तैयार कर ली थी, किन्तु जनवरी 1734 ई. में

अध्याय - 9

राजस्थान की रियासतें और ब्रिटिश संधियां

क्र. सं.	संधिकर्त्ता राज्य	संधि के समय शासक	संधि की तिथि	अंग्रेज कम्पनी को दी जाने वाली खिराज राशि
1.	करौली	हरबक्षपालसिह	9 नवम्बर, 1817	खिराज से मुक्त
2.	टोंक	अमीर खाँ	15 नवम्बर, 1817	-
3.	कोटा	उम्मेद सिह	26 दिसम्बर, 1817	2,44,700 रु.
4.	जोधपुर	मानसिह	6 जनवरी, 1818	1,08,000 रु.
5.	उदयपुर	भीमसिह	22 जनवरी, 1818	राज्य की आय का 1/4 भाग
6.	बून्दी	विसनसिह	10 फरवरी, 1818	80,000 रु.
7.	बीकानेर	सूरतसिह	21 मार्च, 1818	मराठों को खिराज नहीं देता था, इसलिए खिराज से मुक्त
8.	किशनगढ़	कल्याणसिह	7 अप्रेल, 1818	खिराज से मुक्त

अध्याय – 12

राजस्थान में किसान एवं आदिवासी आंदोलन

राजस्थान में आजादी से पूर्व कई किसान एवं आदिवासी आंदोलन हुए जो उन पर किये जा रहे अत्याचारों के विरोध में हुए। राजस्थान में कई रियासतें किसानों से मनमना कर "लाग" वसूलती थी। इनके विरोध में समाय समय पर किसान नेताओं ने राजस्थान में किसान आंदोलन किये। इसी तरह आदिवासियों के ऊपर हुए अत्याचारों के विरोध में भी कई आंदोलन हुए जिनका नेतृत्व आदिवासी नेताओं ने किया जो राजस्थान में आदिवासी अन्दो राजस्थान में किसान आन्दोलन

बिजोलिया किसान आंदोलन

बिजोलिया किसान आंदोलन (बिजोलिया किसान आंदोलन हिंदी में): बिजोलिया किसान आंदोलन राजस्थान से शुरू होकर पुरे देश में फैलने वाला एक संगठित किसान आंदोलन था। बिजोलिया किसान आंदोलन इतिहास का सबसे लंबा चला अहिंसक किसान आंदोलन था, जोकि करीब 44 साल तक चला गया।

बिजौलिया किसान आन्दोलन (1897-1941 44 वर्षों तक) -

जिला भीलवाड़ा

बिजौलिया का प्राचीन नाम विजयावल्ली

संस्थापक अशोक परमार

बिलोलिया, मेवाड़ रियासत का ठिकाना था।

कारण

1. लगान की दरे अधिक थी।

2. लाग-बाग कई तरह के थे।

3. बेगार प्रथा का प्रचलन था।

बिलोलिया किसानों से 84 प्रकार का लाग-बाग (टेक्स) वसुल किया जा जाता था।

बिजोलिया के किसान धाकड़ जाति के लोग अधिक थे।

बिजोलिया किसान आन्दोलन तीन चरणों में पुरा हुआ था।

1. 1897 से 1916 नेतृत्व -साधु सीताराम दास

2. 1916 से 1923 नेतृत्व - विजयसिह पथिक

3. 1923 से 1941 नेतृत्व - माणिक्यलाल वर्मा, हरिभाऊ उपाध्याय जमनालाल बजाज, रामनारायण चौधरी

प्रथम चरण (1897 से 1916 तक) से

- 1897 में बिजौलिया के किसान राम धाकड़ के मृत्युभोज के अवसर पर गिरधारीपुरा गांव में एकत्रित होते और ठिकानेदार की शिकायत मेवाड़ के महाराणा से करने का निश्चिय करते हैं। और नानजी पटेल व ठाकरी पटेल को उदयपुर भेजा जाता है जहां मेवाड़ के महाराणा फतेहसिह ने कोई भी कार्यवाही नहीं की। इस समय बिजौलिया के ठिकानेदार रावकृष्ण सिह ने 1903 में किसानों पर चंवरी कर लगाया।
- चंवरी कर एक विवाह कर था इसकी दर 5 रूपये थी। 1906 में कृष्णसिह मर गया और नये ठिकानेदार राव पृथ्वीसिह बने जिन्होंने तलवार बंधाई कर (उत्तराधिकारी शुल्क किसानों पर लागु कर दिया।
- 1915 में पृथ्वी सिंह ने साधु सीताराम दास व इसके सहयोगी फतहकरण चारण व ब्रह्मदेव को बिजोलिया से निष्कासित कर दिया।

द्वितीय चरण (1916 से 1923 तक)

- 1917 में विजयसिह पथिक ने ऊपरमाल पंचबोर्ड (उपरमाल पंचायत) का गठन मन्ना पटेल की अध्यक्षता में किया। बिजोलिया किसान आन्दोलन को लोकप्रिय व प्रचलित करने वाले समाचार पत्र प्रताप 2. ऊपरमाल डंका थे।
- 1919 में बिन्दुलाल भट्टाचार्य आयोग को बिजोलिया किसान आन्दोलन की जांच के लिए भेजा जाता है। इस आयोग ने लगान कि दरें कम करने तथा लाग-बागों को हटाने की सिफारिश की किन्तु मेवाड के महाराणा ने इसकी कोई भी सिफारिश स्वीकार नहीं की।
- 1922 में राजपूताना का ए.जी. जी. रॉबर्ट हॉलेण्ड बिजोलिया आते हैं और किसानों और ठिकानेदार के मध्य समझौता करवाते हैं यह समझौता स्थाई सिद्ध नहीं हुआ।

अध्याय – 15

राजस्थान इतिहास की प्रसिद्ध महिला व्यक्तित्व

अंजना देवी चौधरी

अंजना देवी अग्रवाल का जन्म सीकर जिले के श्रीमाधोपुर में हुआ। राजस्थान सेवा संघ के कार्यकर्ता रामनारायण चौधरी से इनका विवाह हुआ। अंजना देवी ने बिजोलिया तथा बेगूं किसान आन्दोलन में महिलाओं का नेतृत्व किया। 1921-24 में मेवाड़, बूंदी राज्यों की स्त्रियों में राष्ट्रीयता, समाज सुधार की भावना को बढ़ावा दिया। 1925 ई. में बिजोलिया में लगभग 500 स्त्रियों के जत्थे का नेतृत्व करके नाजायज हिरासत से किसानों को छुड़ाया ये समस्त रियासती जनता में गिरफ्तार होने वाली पहली महिला थी। इन्हें बूंदी राज्य से निर्वासित भी होना पड़ा। 1934-36 ई. तक अजमेर के नारोली आश्रम में रह कर हरिजन सेवा कार्यों में भाग लिया।

रतन शास्त्री

रतन व्यास का जन्म खाचरोद, मध्य प्रदेश में हुआ। इनका विवाह हीरालाल शास्त्री से हुआ। रतन शास्त्री ने सन् 1931 ई. में जयपुर राज्य प्रजामण्डल के सत्याग्रह आन्दोलन में सक्रिय रूप से भाग लिया और सन् 1942 ई. के भारत छोड़ो आन्दोलन में भूमिगत कार्यकर्त्ताओं और उनके परिवारों की सेवा की। सन् 1955 ई. में इन्हें पद्मश्री से सम्मानित किया गया। 1975 ई. में पद्म विभूषण से सम्मानित राजस्थान की प्रथम महिला बनी।

नगेन्द्रबाला

नगेन्द्रबाला केसरीसिंह बारहठ की पोत्री थी। 1941-1947 ई. तक किसान आंदोलन में सक्रिय रही। स्वतंत्रता के पश्चात् ये कोटा की जिला प्रमुख रही। इन्हें राजस्थान की प्रथम महिला जिला प्रमुख होने का गौरव प्राप्त है। ये राजस्थान विधानसभा की सदस्य भी रही हैं।

जानकी देवी बजाज

जानकी देवी का जन्म मध्यप्रदेश के जावरा कस्बे में हुआ। इनका विवाह जमनालाल बजाज के साथ हुआ और इन्हें वर्धा में आना पड़ा। बजाज जी के देहान्त के बद इनको गौसेवा संघ की अध्यक्षा बनाया गया। ये जयपुर प्रजामण्डल के 1944 ई. के अधिवेशन की अध्यक्षा चुनी गई। विनोबा भावे के भूदान आन्दोलन के दौरान 108 कुओं का निर्माण करवाया। 1956 ई. में सरकार ने इन्हें 'पद्म विभूषण' से सम्मानित किया।

नारायणी देवी वर्मा

नारायणी देवी का जन्म सिंगोली मध्य प्रदेश में हुआ। इनका विवाह श्री माणिक्यलाल वर्मा से हुआ। बिजोलिया किसान आन्दोलन के समय इन्हें कुम्भलगढ़ के किले में बन्दी बना लिया गया। नवम्बर 1944 ई. में महिला शिक्षा तथा जागृति के लिए भीलवाड़ा में महिला आश्रम नाम की संस्था स्थापित कर महिलाओं के सर्वांगीण विकास का कार्य अपने हाथ में लिया। 1970 में राज्यसभा से निर्वाचित किया गया।

शांता त्रिवेदी

शांता देवी जन्म नागपुर महाराष्ट्र में हुआ। इनका विवाह उदयपुर के परशुराम त्रिवेदी के साथ हुआ। शांता त्रिवेदी ने 1947 ई. में उदयपुर में राजस्थान महिला परिषद् की स्थापना की।

मिस लुटर

मिस लुटर का पूरा नाम लिलियन गोडाफ्रेडा डामीथ्रोने लुटर था। इनका जन्म क्यामो, बर्मा में हुआ था। द्वितीय विश्व युद्ध के समय ये भारत आ गयी। उन्हीं दिनों जयपुर की महारानी गायत्री देवी ने राजपूत घराने की लड़कियों की शिक्षा के लिए एक स्कूल शुरू किया। मिस लूटर को 1935 ई. में महारानी गायत्री देवी स्कूल में प्राचार्य पद पर नियुक्त किया गया। वे जीवन पर्यन्त इस पद पर रहीं। महिला जगत में शिक्षा के प्रसार के लिए भारत सरकार ने 1970 ई. में इन्हें पद्मश्री से सम्मानित किया। 1976 ई. में ब्रिटिश सरकार ने भी महिला शिक्षा के लिए सम्मानित किया।

कालीबाई

डूंगरपुर जिले के रास्तापाल गांव की भील कन्या कालीबाई अपने शिक्षक सेंगाभाई को बचाने के प्रयास में पुलिस द्वारा गोलियों से छलनी कर दी गई। इनकी मृत्यु 20 जून, 1947 हुई। रास्तापाल में इनकी स्मृति में एक स्मारक बना हुआ है।

किशोरी देवी

महिलाओं के प्रति अमानवीय व्यवहार करने वालों के विरोध में सीकर जिले के कटराथल नामक स्थान पर किशोरी देवी की अध्यक्षता में एक विशाल महिला सम्मेलन 1934 ई. में आयोजित किया गया। जिसमें क्षेत्र की लगभग 10,000 महिलाओं ने भाग लिया। किशोरी देवी स्वतंत्रता सेनानी सरदार हरलाल सिंह खर्रा की पत्नी थी।

राजस्थान पटवारी भर्ती परीक्षा - 2021

1. भाग – 1 सामान्य हिंदी एवं अंग्रेजी
2. भाग – 2 सामान्य विज्ञान एवं कंप्यूटर
3. भाग – 3 इतिहास (भारत + राजस्थान)
4. भाग – 4 भूगोल (भारत + राजस्थान) , कला एवं संस्कृति
5. भाग - 5 संविधान एवं राजनीतिक व्यवस्था (भारत + राजस्थान)
6. भाग - 6 गणित एवं रीजनिंग

इन नोट्स में राजस्थान पटवारी भर्ती परीक्षा - 2021 का कम्पलीट सिलेबस (पाठ्यक्रम) शामिल किया गया है , जो लगभग 1400 पेज में समाप्त किया गया है / इनको छात्रों को पड़ने में सिर्फ दो से ढाई माह का समय लगेगा /

नोट्स की विशेषताएं -

1. ये नोट्स निम्नलिखित लोगों के द्वारा तैयार किये गये हैं –
   1) राजस्थान की प्रमुख , प्रसिद्ध , प्रतिष्ठित कोचिंग संस्थानों की BEST FACULTIES द्वारा तैयार किये गये हैं , जो अपने अपने विषयों में निपुण हैं तथा जिन्हें कम से कम **राजस्थान पटवारी** का कोर्स पढ़ाने का 5 साल का अनुभव है
   2) इसके आलावा 2/3 वर्षों से **राजस्थान पटवारी** का अध्ययन कर रहे कुछ एक्सपर्ट छात्र , जो किसी वजह से सिलेक्शन नहीं ले पा रहे हैं
   3) कुछ टॉपर्स से हमारा टाई अप है जो फ़िलहाल नौकरी कर रहे है लेकिन आप लोगो को आगे बढ़ाने के लिए वो हमनें अपने इनपुट्स देते हैं और हमने उनको इन नोट्स में शामिल लिया है
   4) इसके आलावा INFUSION NOTES की अपनी एक अलग टीम है जिसमे सभी अपने अपने विषयों के एक्सपर्ट्स हैं , वो लोग इनको रिव्यु करके अंतिम रूप से तैयार करते है

इन नोट्स में क्या क्या शामिल है

1) **राजस्थान पटवारी परीक्षा** का कम्पलीट सिलेबस (पाठ्यक्रम) शामिल किया गया है सिलेबस के अलावा उसी से जुडी हुई ऐसी जानकारी जो परीक्षा की दृष्टि से महत्वपूर्ण है

2) पिछले वर्षों में आये हुए प्रश्नों का विश्लेषण करके जो टॉपिक अधिक महत्त्वपूर्ण लगे हैं उन पर अधिक ध्यान दिया गया है
3) सभी नोट्स HANDWRITTEN हैं जो नवीनतम रूप से तैयार किये गये है , साफ - साफ लेखन कार्य किया गया हैं
4) हमने इन नोट्स में TRICKS डाली हैं , जिससे फैक्ट्स को आसानी से याद किया जा सके
5) सिर्फ उतनी ही जानकारी को शामिल किया गया हैं , जो परीक्षा की दृष्टि से महत्व पूर्ण है , अनावश्यक जानकारी को हटा दिया गया है
6) MATHES में प्रत्येक सवाल को 2 तरह से (LONG METHOD + SHORT METHOD) में समझाया गया है तथा प्रश्न भी दिए गये हैं ,और उनके सोलूशन भी
7) रिवीजन के लिए अंत में शोर्ट में वनलाइनर रिवीजन तथ्य भी दिए गये है

ये नोट्स आपकी सफलता में कैसे मदद करेंगे –

1. नोट्स को एक्सपर्ट टीम ने तैयार किया है , जो कोचिग संस्थानों पर पढ़ाते हैं , इसलिए नोट्स की भाषा इतनी सरल है की कोई भी तथ्य एक बार पढने से समझ में आ जाएगा / नोट्स को खुद से ही आसानी से समझा जा सकता है
   इसलिए कोचिग करने की कोई आवश्यकता नही है , इससे हजारों रूपये की कोचिग फीस बचेगी /

2. सारा मटेरियल सिलेबस और पिछले वर्षों में आये हुए प्रश्नों के आधार पर तैयार किया गया हैं तो अनावश्यक डाटा को पढने से बचेंगे साथ ही कम से कम समय में पूरा पाठ्यक्रम समाप्त हो जाएगा ,
3. इसके आलावा हमारे एक्सपट्र्स आपको समय - समय पर बताते रहेंगे की तैयारी कैसे - कैसे करनी है

4. इन नोट्स को कुछ इस तरह से भी तैयार किया गया है , की यदि किसी कारणवश छात्र का एग्जाम नही निकलता है तो उसमे जो जानकारी दी गयी वो किसी अन्य एक्साम्स में भी काम आ सकती है , अर्थात् छात्र इनको पढ़कर किसी अन्य एग्जाम में भी APPEAR कर सकता है /

5. इन नोट्स को इस तरह से तैयर किया गया है कि इनको सभी तरह के छात्र आसानी से पढ़ सकते है , जैसे कमजोर छात्र , मीडियम छात्र , एक्सपर्ट्स छात्र /

PRICE DETAIL -

TOTAL six NOTES COST = 600 * 6 = 3600

लेकिन अभी इसकी कीमत है

2190 = RS. (OF six NOTES)

5 % DISCOUNT , यदि ऑनलाइन पेमेंट करते है तो (109 rs discount)

NOTES COST = 2080 RS.

PAYMENT MODE - BOTH - ऑनलाइन , OFFLINE (CASH ON DELIVERY)

DELIVERY TIME = WITHIN Three DAYS

Online Order के लिए Official website	https://www.infusionnotes.com/product/rajasthan-patwari-notes-handwritten-6-books/
Facebook Page	https://www.facebook.com/infusion.notes
Phone Number	01414045784, 8233195718